राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड संगठन की मासिक पत्रिका

स्काउट गाइड ज्योति

वर्ष–25 | अंक–01 | जुलाई, 2024 | कुल पृष्ठ–32 | मूल्य–₹ 15

राजभवन में आयोजित भारत स्काउट व गाइड विभाग की समीक्षा बैठक के दौरान अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र, साथ में राज्य मुख्यायुक्त श्री निरंजन आर्य (दाएं) एवं राज्यपाल के सचिव श्री गौरव गोयल (बाएं)

चित्र विथिका

समीक्षा बैठक में राज्यपाल महोदय को स्कार्फ पहनाकर एवं पुष्प गुच्छ भेंट कर स्वागत करते हुए राज्य मुख्यायुक्त श्री निरंजन आर्य

राज्यपाल महोदय को पुष्प–गुच्छ भेंट करते हुए राज्य आयुक्त डॉ. अखिल शुक्ला एवं राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित समीक्षा बैठक में उपस्थित संगठन अधिकारीगण

स्काउट गाइड ज्योति
वर्ष : 25 अंक : 01
जुलाई, 2024

सलाहकार मण्डल

निरंजन आर्य
आई.ए.एस. (से.नि.)
स्टेट चीफ कमिश्नर

आशीष मोदी, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (स्काउट)

निर्मल पंवार
स्टेट कमिश्नर (रोवर)

डॉ. भंवर लाल, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (कब)

महेन्द्र कुमार पारख, आई.ए.एस.(से.नि.)
स्टेट कमिश्नर (एडल्ट रिसोर्स)

रूक्मणि आर.सिहाग, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (गाइड)

शुचि त्यागी, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (रेंजर)

टीना डाबी, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (बुलबुल)

मुग्धा सिन्हा, आई.ए.एस.
स्टेट कमिश्नर (एडल्ट रिसोर्स)

स्टेट कमिश्नर (हैडक्वार्टर्स-स्काउट)
नवीन महाजन, आई.ए.एस.
नवीन जैन, आई.ए.एस.
टीकम चंद बोहरा, आई.ए.एस.
डॉ. एस.आर. जैन
डॉ. अखिल शुक्ला

स्टेट कमिश्नर (अहिंसा, शांति-समन्वय)
मनीष कुमार शर्मा

राज्य कोषाध्यक्ष
ललित वर्मा

सम्पादक
डॉ. पी.सी.जैन
राज्य सचिव

सहायक सम्पादक
नीरज जैन

इस अंक में

विषय	पृष्ठ संख्या
दिशाबोध	4
संपादकीय	4
राज्यपाल की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक	5
राज्य मुख्यायुक्त द्वारा कमिश्नर्स कोर्स का निरीक्षण	6
ग्रीष्मावकाश विशेष कार्यक्रम सम्पन्न	7
गरइड्स ने लिया प्रशिक्षण	9
स्काउट्स ने हाइक में किया आबू भ्रमण	9
रोवर/रेंजर ट्रेकिंग कम साहसिक शिविर एवं स्काउटर गाइडर शैक्षिक भ्रमण शिविर	10
सह शैक्षिक गतिविधियों में शामिल स्काउटिंग	13
स्काउट की कलम से : जो लम्हे गुजारे साथ..	15
गतिविधि दर्पण	16
बढ़ती जनसंख्या-घटते संसाधन	22
हमारे महापुरुष : मंगल पांडे	23
पर्यटन स्थल : कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य	25
हमारा स्वास्थ्य : टायफायड	26
शिक्षण में पर्यावरण मित्र परियोजनाओं का समावेश	27
दक्षता पदक	29
गतिविधि पञ्चांग	30

लेखकों से निवेदन

स्काउट गाइड ज्योति का प्रकाशन मात्र प्रकाशन भर नहीं है बल्कि यह पत्रिका हमारे संगठन का दर्पण है, जो आयोजित हो चुकी गतिविधियों को प्रस्तुत करने, संगठन के कार्यों और इसके प्रशिक्षण तथा अन्य समाजोपयोगी क्रियाकलापों के विचारों को प्रकट करने का सशक्त माध्यम है।

समस्त पाठकों, सृजनात्मक एवं रचनाधर्मी प्रतिभाओं से स्वलिखित, मौलिक व पूर्व में अप्रकाशित स्काउटिंग गाइडिंग से संबंधित लेख, यात्रा वृत्तान्त, कैम्प क्राफ्ट संबंधी लेख, प्रशिक्षण विधि, पाठक प्रतिक्रिया आदि प्रकाशनार्थ आमंत्रित हैं। आपके अनुभव प्रत्येक स्काउट गाइड के लिए अमूल्य हैं। आप द्वारा प्रेषित सामग्री आपके नाम व फोटो के साथ प्रकाशित की जावेगी। लेख स्पष्ट टंकित हो तथा उस पर यह अवश्य लिखा हो कि 'यह लेख मौलिक एवं अप्रकाशित है'।

प्रकाशनार्थ सामग्री हमारी ईमेल आई.डी. **scoutguidejyoti@gmail.com** पर भिजवाई जा सकती हैं।

स्काउट गाइड ज्योति वार्षिक सदस्यता शुल्क	आजीवन सदस्यता शुल्क
व्यक्तिगत शुल्क :100/- संस्थागत शुल्क:150/-	1200/-
शुल्क राशि राज्य मुख्यालय जयपुर पर एम.ओ. अथवा 'राजस्थान स्टेट भारत स्काउट एण्ड गाइड, जयपुर' के नाम डिमान्ड ड्राफ्ट द्वारा जमा कराई जा सकती है।	

नोट : स्काउट गाइड ज्योति में छपे/व्यक्त विचार प्रस्तोता के अपने हैं। यह जरूरी नहीं है कि संगठन इनसे सहमत ही हो।

दिशाबोध

नव शिक्षा सत्र की शुभकामनाएं

समय कभी रूकता नहीं है, ग्रीष्मावकाश के बाद नवीन शिक्षा सत्र आपके स्वागत के लिए आतुर है, आप सब भी उत्सुक होंगे। समयानुकूल कार्य हमेशा हमें सफलता की राह पर अग्रसर होने में मदद करते हैं। आप सभी का नया सत्र नये लक्ष्यों एवं उम्मीदों के साथ आपकी मंज़िल प्राप्ति में सहायक हो। नये सत्र पर सभी स्काउट–गाइड, रोवर–रेंजर एवं स्काउटर–गाइडर को हार्दिक शुभकामनाएं संप्रेषित कर रहा हूँ।

शुभकामना इस बात के लिए भी देना चाहता हूँ कि हमारे ग्रुपों द्वारा किये गये पर्यावरणीय कार्यों के लिए लगभग प्रत्येक वर्ष उन्हें राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार मिलता ही है। हाल ही में राजस्थान के विद्यालयों को अर्थियन पुरस्कार से नवाज़ा गया है। पर्यावरण की दृष्टि से यह माह बहुत महत्वपूर्ण है। पिछले दो माह के दौरान पर्यावरण को सुधारने, संरक्षण और उसके प्रति जन चेतना जागृत करने के उद्देश्य से अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय दिवस मनाये गये। पर्यावरण की रक्षा के लिए प्रदेश संगठन के माध्यम से अनेक प्रभावी गतिविधियाँ निरन्तरता लिये हुए कई वर्षों से चल रही हैं। मैं सभी से आह्वान करता हूँ कि, 11 जुलाई 2011 को हमने जो सघन पौधारोपण किया था, उन्हें हम सभी को मिलकर संजोकर रखना है, उन पौधों को आप सभी की नियमित सार–संभाल की आवश्यकता है। अतः नए सत्र में शिक्षा के साथ–साथ कुछ समय उन पौधों को भी अवश्य दें। प्रकृति के प्रति पूर्ण सजग रहते हुए सभी को जागरूक करना हमारा दायित्व है।

सभी स्काउट–गाइड व स्काउटर–गाइडर को नव शिक्षा सत्र की पुनः शुभकामनाएं देते हुए आह्वान करता हूँ कि हम सभी पर्यावरण की सुरक्षा और संरक्षण के प्रति और अधिक संवेदनशील बनें और पूरे समाज को भी प्रेरित करें, मानसून के वर्षा जल को संरक्षित करने का प्रयास भी करें।

निरंजन आर्य
स्टेट चीफ कमिश्नर

संपादकीय

ग्रीष्मावकाश और स्काउट गाइड संगठन का कई दशकों पुराना सम्बन्ध है। दोनों एक दूसरे के पूरक भी बने हुए हैं। इस संगठन में गर्मी की छुट्टियाँ साहस, स्वावलम्बन और सेवा को समर्पित रहती है।

इन्हीं दो माह की अवधि में संगठन अपने बालक–बालिकाओं को स्वावलम्बन के मार्ग पर अग्रसर करने के उद्देश्य से कला कौशल एवं लघु उद्योग प्रशिक्षण शिविरों का संचालन करता है तो समाज के बीच सेवा कार्यों में समर्पित रहते हैं। राजस्थान में पड़ने वाली गर्मी से कुछ राहत दिलाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष आबूपर्वत पर अनेक शिविर आयोजित किये जाते है एवं देश के ऐसे हिस्सों में रोवर–रेंजर एवं स्काउटर–गाइडर का साहसिक एवं शैक्षिक भ्रमण का आयोजन भी किया जाता है, जहाँ तापमान में ठण्डक और कमी होती है।

इस वर्ष का साहसिक एवं शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम देवभूमि कहे जाने वाले 'हिमाचल प्रदेश' के धर्मशाला में आयोजित किया गया। जिस दौरान राजस्थान में तापमान 45 से 50 डिग्री को छू रहा था, सूर्य देव राजस्थान की धरा को गर्म लपटों से झुलसा रहे थे, वहीं हिमाचल में उन्हीं दिनों में तापमान 25–30 डिग्री के आसपास था, ठण्डी हवाओं के बीच हरियाली से आच्छादित पहाड़ों पर हमारे लगभग 300 संभागियों ने उस सुहाने मौसम में पर्वतारोहण भी किया और प्रकृति की मनोरम छटाओं से जीवन के सुखद पलों का सौभाग्य पाया।

स्वावलम्बन की खूबियों से प्रेरित हो हमारा संगठन बालक–बालिकाओं के जीवनोत्थान की दिशा में गत् 50 वर्षों से क्रियाशील है और बालक–बालिकाएं अनेक प्रकार के कार्यों और हस्तकलाओं में दक्षता प्राप्त कर मजबूत बुनियाद के साथ इस आर्थिक युग में अपना जीवन यापन करने में सफल साबित होते हैं।

समग्र उत्थान के साथ स्वयं का उत्थान की सोच के साथ ग्रीष्मावकाश में बालक–बालिकाएं पर–सेवा से स्वयं के उत्थान का मार्ग प्रशस्त करते हैं। स्काउट गाइड पशु–पक्षियों, राहगीरों और यात्रियों की सेवा में समर्पित रहते हैं।

साहस, स्वावलम्बन और सेवा ...... वास्तव में विविध गतिविधियों से भरा ग्रीष्मावकाश हमारा अनूठा आयाम है।

डॉ. पी.सी. जैन
राज्य सचिव

राज्यपाल की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक

स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य के नेतृत्व में उपस्थित संगठन अधिकारियों को अजमेर मण्डल की चल वैजयन्ति प्रदान करते हुए राज्यपाल श्री कलराज मिश्र

जयपुर स्थित राजभवन में 6 मई को आयोजित राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड की समीक्षा बैठक में राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने कहा है कि राज्य के सभी विद्यालयों और महाविद्यालयों में स्काउट गाइड सह शैक्षिक गतिविधियों का प्रभावी क्रियान्वयन किया जाए। उन्होंने कहा कि इसके लिए सभी स्तरों पर वातावरण निर्माण कर कार्य किया जाए। राज्यपाल ने स्काउट गाइड में उत्कृष्ट कार्यों के लिए संगठन के अजमेर मण्डल को इस अवसर पर चल वैजयंती शील्ड भी प्रदान की।

राज्यपाल श्री मिश्र ने सोमवार 6 मई को राजभवन में राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड की विशेष बैठक में संगठन के पदाधिकारियों व अन्य अधिकारियों को संबोधित किया। बैठक के प्रारम्भ में राज्य मुख्य आयुक्त श्री निरंजन आर्य ने राज्यपाल महोदय का स्वागत संगठन का स्कार्फ पहना कर, राज्य आयुक्त डॉ. अखिल शुक्ला एवं राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन ने पुष्प गुच्छ भेंट कर किया।

बैठक में संगठन के राज्य मुख्य आयुक्त श्री निरंजन आर्य ने बताया कि राज्य सरकार की सौ दिवसीय कार्य योजना के अंतर्गत 1 हजार 500 नवीन विद्यालयों में स्काउट गाइड समूह का पंजीकरण कर इनकी गतिविधियां प्रभावी की गई हैं। इसी तरह 8 हजार 826 निष्क्रिय समूहों को सक्रिय किया गया तथा उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 4 हजार से अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया गया। बैठक में श्री आर्य ने इस संगठन के अंतर्गत गुणात्मक वृद्धि के लिए किए गए प्रयासों के बारे में भी राज्यपाल महोदय को अवगत कराया।

राज्यपाल ने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि राजस्थान शिक्षा के साथ सह शैक्षिक गतिविधियों में राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड देश भर में अग्रणी है। उन्होंने शिक्षा के साथ साथ विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमताओं के विकास के लिए निरंतर कार्य किए जाने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति में भी विद्यार्थियों की क्षमता विकास पर ही अधिक जोर दिया गया है।

राज्यपाल ने पूरे देश में एक मात्र राजस्थान में स्काउट गाइड के आवासीय विद्यालयों का गठन कर उनका संचालन को भी महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने जगतपुरा, जयपुर और खुडी, लक्ष्मणगढ़, सीकर में इस तरह के आवासीय विद्यालयों और वहां की गतिविधियों से विद्यार्थियों में सृजनात्मक क्षमताओं के विकास के लिए किए गए कार्यों की सराहना भी की। उन्होंने राज्य के सभी वित्तपोषित विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड की सहशैक्षिक गतिविधियों का प्रभावी क्रियान्वयन के साथ इनमें देशभर में राज्य को अग्रणी किए

शेष अगले पृष्ठ पर...

राज्यपाल श्री कलराज मिश्र की अध्यक्षता में आयोजित समीक्षा बैठक में उपस्थित संगठन एवं राजभवन के पदाधिकारी व अधिकारीगण

राज्य मुख्यायुक्त द्वारा कमिश्नर्स कोर्स का निरीक्षण

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, राज्य मुख्यालय, जयपुर के तत्वावधान में स्काउट गाइड राज्य स्तरीय शिविर केन्द्र, आबूपर्वत के सभागार में आयोजित कमिश्नर्स बेसिक कोर्स का स्टेट चीफ कमिश्नर श्री निरंजन आर्य ने निरीक्षण किया। शिविर में सहभागिता कर रहे 48 कमिश्नर्स को संबोधित करते हुए श्री आर्य ने कहा कि प्रत्येक स्थानीय संघ के प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर अपने अपने क्षेत्र में युवाओं को खुशहाल एवं योग्य बनाने के लिए इस आन्दोलन के सिद्धान्त एवं नियमों का पालन कराएं। जो गतिविधियां विद्यालय में नहीं हो पा रहीं जैसे तैरना, पेड़ पर चढ़ना, भार उठाना, स्काउट गाइड द्वारा जंगल में रास्ते ढूंढना, वृद्धजनों की सेवा करना, एडवेंचर शिविरों में सहभागिता सहित ऐसी अन्य गतिविधियां जो विद्यालय में नहीं हो पा रही हैं उसे स्काउट गाइड द्वारा करवाना।

श्री आर्य ने कहा कि ऐसी गतिविधियों से स्काउट गाइड का शारीरिक व बौद्धिक विकास होगा। स्काउट गाइड की पंजीकरण संख्या 25 लाख तक करने की अपील की। श्री आर्य ने प्रसन्नता पूर्वक एवं तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सिखाई।

श्री आर्य ने इस अवसर पर पौधारोपण किया और आबूपर्वत स्थित प्रशिक्षण केन्द्र गऊमुख की विज़िट भी की। समाजसेवी श्री भरत सिंह ने भी शिविर का अवलोकन किया।

शिविर संचालक श्री रघुवीर सिंह शेखावत ने श्री आर्य का स्वागत एवं शिविर प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। संभागी प्रधानाचार्यों ने सुन्दर सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। श्री लाजपत राय कुमावत, सुरेश कुमार शर्मा, सत्य नारायण वैष्णव, नूतनबाला कपिला, अभय सिंह शेखावत, निर्मला देवी, सी.ओ. स्काउट जितेन्द्र भाटी ने शिविर के संचालन में सहयोग प्रदान किया।

राज्यपाल की अध्यक्षता में समीक्षा बैठक

पिछले पृष्ठ का शेष...

जाने का आह्वान किया। बैठक में बताया गया कि इस समय 60 प्रतिशत से अधिक विश्वविद्यालय, महाविद्यालयों में स्काउट गाइड गतिविधियां संचालित हो रही है।

राज्यपाल ने गोविंद गुरु जनजातीय विश्वविद्यालय की तर्ज पर महाविद्यालयों और विद्यालयों के लिए सात दिवसीय स्काउट गाइड प्रशिक्षण शिविर आयोजित करने के लिए भी कार्यवाही किए जाने पर सहमति जताई। उन्होंने इस संगठन में कोटा मनी और फंड के लिए राशि एकत्रण आदि के लिए भी प्रस्तावों के संदर्भ में कार्यवाही किए जाने की आवश्यकता जताई।

राज्यपाल ने स्काउट गाइड संगठन के जरिए युवाओं को अधिकाधिक लाभान्वित किए जाने पर भी जोर दिया। उन्होंने राष्ट्रीय ग्रीन कोर योजना के तहत स्काउट गाइड संगठन द्वारा ऊर्जा संरक्षण, जल संरक्षण आदि के किए जा रहे कार्यों की सराहना की तथा इन गतिविधियों को और बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने संगठन के आम जन की सेवार्थ किए जा रहे कार्यों को भी अनुकरणीय बताया।

बैठक में स्काउट गाइड के राजस्थान के मुख्यायुक्त श्री निरंजन आर्य ने बताया कि आगामी 3 वर्षों में राज्य में 20 लाख स्काउट गाइड वृद्धि करने की योजना है। राज्य के 6 हजार 594 विद्यालय और महाविद्यालयों के स्वतंत्र समूह पंजीकृत किए गए। इससे पहले स्काउट गाइड के राज्य आयुक्त डॉ. अखिल शुक्ला और अन्य पदाधिकारियों ने राज्यपाल का अभिनंदन किया। राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन ने सभी का आभार जताया। राज्यपाल के सचिव श्री गौरव गोयल सहित बड़ी संख्या में बैठक में अधिकारियों ने भाग लिया।

ग्रीष्मावकाश विशेष कार्यक्रम सम्पन्न

राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड संगठन समूचे राष्ट्र में बालचरों के विकास के उद्देश्य से ग्रीष्मावकाश में विभिन्न साहसिक शिविर, शैक्षिक भ्रमण, रोजगारोन्मुखी अभिरूचि शिविर एवं लघु उद्योग शिविर आयोजित करने की जिम्मेदारी गत कई वर्षों से बखूबी निभाता आ रहा है। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी इस श्रृंखला को आगे बढ़ाते हुए स्काउट गाइड संगठन द्वारा विभिन्न योजनाएं संचालित की गई, जिनमें मई–जून में आबू पर्वत स्थित दोनों स्काउट गाइड शिविर केंद्रों पर ग्रीष्मकालीन शिविरों की श्रृंखला में निम्नानुसार विविध शिविरों का आयोजन हुआ, जिनमें 1342 स्काउट, गाइड, स्काउटर, गाइडर एवं कमिश्नर्स ने सहभागिता की–

क्र.सं.	शिविर का नाम	दिनांक	संचालक दल	संभागी	स्टाफ	कुल योग
1.	स्टेट एडवेंचर शिविर	06 से 10.05.2024	श्री जितेन्द्र भाटी	39	5	44
2.	स्टेट एडवेंचर शिविर	11 से 17.05.2024	श्री जितेन्द्र भाटी	87	10	97
3.	कब यूनिट लीडर एडवांस कोर्स	18 से 24.05.2024	श्री रामवतार सबलनिया	15	5	20
4.	रोवर लीडर एडवांस कोर्स	18 से 24.05.2024	श्री बाबूसिंह राजपुराहित	12	4	16
5.	रोवर लीडर बेसिक कोर्स	18 से 24.05.2024	डॉ. श्रीराम आर्य	28	5	33
6.	स्काउट यूनिट लीडर एडवांस कोर्स	18 से 24.05.2024	श्री विनोद जोशी	45	6	51
7.	स्काउट यूनिट लीडर एडवांस कोर्स	18 से 24.05.2024	श्री शैलेष पलोड	41	6	47
8.	राष्ट्रपति गाइड अवार्ड प्रशिक्षण शिविर	26 से 30.05.2024	श्रीमती नीता शर्मा	284	10	294
9.	गाइड केप्टिन एडवांस कोर्स	26 से 01.06.2024	श्रीमती शकुन्तला पाण्डे	78	10	88
10.	फ्लॉक लीडर एडवांस कोर्स	26 से 01.06.2024	सुश्री बृजरानी माथुर	27	4	31
11.	रेंजर लीडर एडवांस कोर्स	26 से 01.06.2024	सुश्री सुयश लोढ़ा	15	5	20
12.	रेंजर लीडर बेसिक कोर्स	26 से 01.06.2024	श्रीमती मिनाक्षी भाटी	26	5	31
13.	राष्ट्रपति स्काउट अवार्ड प्रशिक्षण शिविर	03 से 07.06.2024	श्री रामजस लिखाला	334	9	343
14.	कमिश्नर बेसिक कोर्स	08 से 12.06.2024	श्री रघुवीर सिंह शेखावत	48	8	56
15.	सचिव प्रशिक्षण शिविर	12 से 18.06.2024	श्री रामजस लिखाला	57	7	64
16.	स्टेट एडवेंचर शिविर	21 से 25.06.2024	श्री जितेन्द्र भाटी	97	10	107
	ग्रीष्मावकाश में आबूपर्वत पर आयोजित शिविरों में कुल संभागित्व			**1233**	**109**	**1342**

ग्रीष्मावकाश में ही आयोजित होने वाले कौशल विकास प्रशिक्षण शिविरों (अभिरूचि शिविरों) का (सन् 1975 से संचालित) पचासवां सत्र प्रदेश के सभी मण्डल व जिला मुख्यालयों के अलावा सभी स्थानीय संघों व अनेक कस्बों में 17 मई से 25 जून, 2024 तक 136 केन्द्रों पर आयोजित किये गये, जिनमें मोटे रूप से लगभग 14 हजार किशोर व युवा लड़के लड़कियों ने भागीदारी की। ये शिविर प्रातः 7 से 11 बजे तक सम्पन्न हुए। इनमें मध्यान्तर में सभी भागीदार साथ में लाया भोजन का आनन्द इस प्रकार से लेते जैसे प्रतिदिन पिकनिक में शरीक होते हों। सभी संभागियों को मैत्री भाव से चहकते देखना दिल को सुकून देता था। इसी दौरान सभी प्रशिक्षण केन्द्रों पर विश्व तम्बाकू निषेध दिवस व पर्यावरण दिवस का भी आयोजन किया गया व हजारों लोगों को तम्बाकू सेवन न करने

की शपथ दिलाई गई। इन शिविर केन्द्रों पर विभिन्न हस्तकलाओं यथा– बिजली के घरेलू उपकरणों की मरम्मत, बिजली फिटिंग, मोबाइल फोन रिपेयरिंग, सिलाई, कढाई, नृत्य, वाद्यवादन, संगीत, मेहंदी मांडना, अल्पना चित्रकारी, टॉप ऑप्ट, साफ्ट ट्वॉयज़ व पॉट मेकिंग के अलावा फूड प्रिजर्वेशन व केनिंग, ब्यूटिशियन आदि हस्तकलाओं का निःशुल्क प्रशिक्षण कुशल प्रशिक्षकों द्वारा प्रदान किया गया।

इस सब के अलावा स्काउट्स व गाइड्स द्वारा राहगिरों व यात्रियों को प्रचण्ड गर्मी से राहत दिलाने के उद्देश्य से रेल्वे स्टेशनों, बस अड्डों व भीड़–भाड़ वाले स्थानों पर शीतल जल सेवा के कार्यक्रम भी जनसेवा भावना के अन्तर्गत किये गये। जयपुर रेल्वे स्टेशन पर पिछले 53 वर्षों से लगातार यह सेवा ग्रीष्मावकाश में होती रही है। राजस्थान के सभी जिलों में छोटे छोटे कस्बों तक में स्काउट्स व गाइड्स द्वारा भीषण गर्मी में राहत देने के लिए जल सेवा का कार्य पूर्ण उत्साह से किया गया।

स्काउट गाइड संस्था के पांचवे नियम के अनुसार स्काउट्स गाइड्स पशु पक्षी व प्रकृति प्रेमी होते हैं, और इसी भावना का परिचय देते हुए ग्रीष्म ऋतु में स्काउट्स व गाइड्स द्वारा अभियान चला कर पक्षियों के लिए पानी के परिण्डे, दाना डालने हेतु चुग्गापात्र व आवास हेतु घोंसले बना कर विभिन्न स्थानों पर टांगे गए व आस पास में रहने वाले लोगों को इनमें दाना पानी डालने का संकल्प दिलाया गया। कुछ ऐसे निर्जन स्थलों जहां पर इस प्रकार की व्यवस्था नहीं हो सकी वहां स्काउट्स गाइड्स ने स्वयं दाना पानी डालने की जिम्मेदारी ली। स्काउट गाइड संगठन की प्रेरणा व पहल पर सन् 2003 से संचालित परिण्डा व चुग्गा पात्र अभियान परवान चढ़ने लगा है और इससे प्रेरित होकर अन्य सेवाभावी संस्थाएं व पुण्यात्मा नागरिक परिण्डा बंधन की लुप्त होती परम्परा को पुनर्जीवित करने में लगे हैं। स्काउट गाइड व उनके वयस्क लीडर्स की पहल पर राज्य के प्रत्येक विद्यालय एवं उनके घरों पर चुग्गापात्र व परिण्डे लगने के आसार हैं।

– स्काउट गाइड ज्योति डेस्क

आबू में निकाली पर्यावरण चेतना रैली

पर्यावरण दिवस के अवसर पर आबूपर्वत पर चल रहे शिविर में समस्त 295 स्काउट्स को पर्यावरण सरंक्षण के प्रति जागरूकता को बनाए रखने का संकल्प दिलवाया। पर्यावरण दिवस के अवसर पर प्रातः 6 बजे स्काउट प्रशिक्षण केंद्र से वरिष्ठ लीडर ट्रेनर अभय सिंह शेखावत ने पर्यावरण जन चेतना रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

यह रैली शहर के विभिन्न मार्गों से होती हुई अर्बुदा देवी मंदिर पहुंची, जहां स्काउट्स ने पॉलीथिन एवं कचरा एकत्रित किया और आसपास के दुकानदारों को संकल्प दिलवाया कि प्लास्टिक का उपयोग नहीं करेंगे और कचरे को कचरा पात्र में एकत्रित कर व्यवस्थित स्थान पर ही डालेंगे। शिविर संचालक रामजस लिखाला ने उपस्थित जन समूह से प्रतिवर्ष कम से कम दो पेड़ लगाने का आह्वान किया।

माउंट आबू के सी.ओ. स्काउट जितेंद्र सिंह भाटी ने बताया कि माउंट आबू में होने वाले शिविरों में संभागियों द्वारा विभिन्न धार्मिक एवं दर्शनीय स्थलों पर सेवा कार्य के माध्यम से जन जागृति का संदेश दिया जाता है। इस कड़ी में पर्यावरण दिवस के अवसर पर वन विभाग, नगर पालिका के साथ मिलकर स्काउट्स ने अर्बुदा देवी मंदिर पर सेवा कार्य किया।

गाइड्स ने लिया प्रशिक्षण

राष्ट्रपति अवार्ड गाइड प्रशिक्षण शिविर

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, राज्य मुख्यालय, जयपुर के तत्वावधान में आबू पर्वत पर आयोजित राष्ट्रपति गाइड अवार्ड प्रमाण पत्र प्रशिक्षण शिविर दिनांक 26 से 30 मई 2024 तक आयोजित किया गया, जिसमें संपूर्ण राज्य से 262 गाइड्स व 21 गाइडर्स सहित कुल 283 ने सहभागिता की।

शिविर में प्रवेश से लेकर राष्ट्रपति अवार्ड तक के सभी विषयों पर जैसे नियम प्रतिज्ञा, आंदोलन का इतिहास, लॉर्ड बेडेन पावेल की जीवनी, सीटी के संकेत, हाथों के संकेत, प्राथमिक चिकित्सा, जलना झुलसना कटना, जहरीले कीड़ों जैसे बिच्छू सर्प का काटना, नकसीर आना, गले में सिक्का फंसना इत्यादि के उपाय व विभिन्न विधियों द्वारा उपचार, कृत्रिम श्वास, सीपीआर, पायनियरिंग, अनुमान लगाना, खोज के चिन्ह, मेपिंग, दिशा ज्ञान व सामान्य ज्ञान आदि विषयों पर दक्ष प्रशिक्षकों सी.ओ. गाइड सुनीता मीणा, निरमा मीणा, गाइडर्स अनीता सिंह, हिमांशी जैन, सपना यादव द्वारा लिखित व प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। शिविर का संचालन सहायक राज्य संगठन आयुक्त (गाइड) एवं लीडर ट्रेनर श्रीमती नीता शर्मा द्वारा किया गया।

स्काउट्स ने हाइक में किया आबू भ्रमण

राष्ट्रपति अवार्ड स्काउट प्रशिक्षण शिविर

राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड, राज्य मुख्यालय, जयपुर के तत्वावधान में राज्य प्रशिक्षण केंद्र माउंट आबू पर राष्ट्रपति अवार्ड स्काउट प्रमाण पत्र शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में स्काउट्स ने हाइक विषय के तहत माउंट आबू के विभिन्न ऐतिहासिक एवं दर्शनीय स्थलों का भ्रमण कर अपने ज्ञान में वृद्धि की। शिविर संचालक रामजस लिखाला ने बताया कि 3 से 7 जून तक आयोजित इस शिविर में संपूर्ण राजस्थान के 295 स्काउट्स ने राष्ट्रपति अवार्ड का प्रशिक्षण प्राप्त किया। राष्ट्रपति अवार्ड के पाठ्यक्रम के तहत स्काउट्स ने माउंट आबू के अर्बुदा देवी, देलवाड़ा जैन मंदिर, अचलगढ़, गुरु शिखर आदि ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन स्थलों का अवलोकन कर हाइक रिपोर्ट तैयार की। शिविर में स्काउट्स को बीपी सिक्स, अनुमान लगाना, विभिन्न दक्षता पदक, लॉग बुक की जानकारी, एंबुलेंस मैन बैज, आपदा प्रबंधन बैज, सामुदायिक सेवा कार्य जैसे विषयों का प्रशिक्षण राज्य के दक्ष प्रशिक्षकों के द्वारा दिया गया। शिविर के अंतिम दिन सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया। शिविर में लीडर ट्रेनर अभयसिंह शेखावत जयपुर, लीडर ट्रेनर अनिल कुमार शर्मा, सी.ओ. एवं लीडर ट्रेनर महिपाल सिंह तंवर, सी.ओ. एवं लीडर ट्रेनर महेश कालावत, सी.ओ. देवेंद्र प्रसाद मीणा, सहायक लीडर ट्रेनर सुभाष पारीक परबतसर ने स्काउट्स को प्रशिक्षण दिया।

रोवर/रेंजर ट्रेकिंग कम साहसिक शिविर एवं स्काउटर गाइडर शैक्षिक भ्रमण शिविर

स्थान: राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला डाढ, चामुण्डा देवी, धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)

दिनांक: 10 से 14 जून, 2024 एवं 15 से 19 जून, 2024

◇ एल.आर. शर्मा
सी.ओ. स्काउट

राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड, राज्य मुख्यालय, जयपुर के तत्वावधान में प्रतिवर्ष ग्रीष्मावकाश के समय आयोजित होने वाली गतिविधि जिसमें अन्य प्रदेश की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, धार्मिक स्थानों की जानकारी प्राप्त की जा सके, का आयोजन इस वर्ष देव भूमि हिमाचल प्रदेश में दिनांक 10 से 14 व 15 से 19 जून 2024 तक राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला डाढ़ में हुआ।

रोवर रेंजर शिविर में राजस्थान प्रदेश के विभिन्न जिलों से 61 रोवर्स, 47 रेंजर्स, 21 स्काउटर्स एवं 05 गाइडर्स कुल 134 संभागी तथा स्काउटर गाइडर शिविर में 101 स्काउटर्स एवं 51 गाइडर्स कुल 152 संभागी सम्मिलित हुए। 05–05 दिवसीय इन शिविरों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है–

प्रथम दिवस 10.06.2024/15.06.2024 –

शिविर का भव्य शुभारंभ

शिविरों का बैस केम्प देवभूमि के धर्मशाला में विराजमान 9 देवीयों में से एक चामुण्डा माता के मन्दिर से 1.5 कि.मी. दूर रा.व.मा. विद्यालय डाढ में रखा गया।

एक रात पहले से रोवर्स रेंजर्स एवं स्काउटर्स गाइडर्स का आगमन शुरू हो चुका था, दोनों तरफ से रोमांच बना हुआ था संचालक दल की तरफ से शिविरार्थियों के स्वागत के लिए एवं संभागियों की तरफ से पठानकोट से बैस केम्प समय पर पहुंच कर प्रथम दिन के साइटसीन को देखने का उत्साह चरम पर था।

दोपहर 03 बजे आखिर वो समय आ गया। रंगारंग कार्यक्रमों के साथ भव्य शुभारंभ हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्री हेमराज बैरवा (I.A.S.) DC धर्मशाला, अध्यक्षता सहा.राज्य संगठन आयुक्त श्री बाबूसिंह राजपुरोहित, विशिष्ट अतिथि श्री हरबन्त सिंह जिला मुख्यायुक्त धर्मशाला, श्री अतुल कटोच जिला सचिव, श्रीमती रेणुका गुप्ता संयुक्त सचिव, श्रीमती निशा नेहरिया जिला संगठन आयुक्त, श्री करण सिंह ठाकुर सहा. जिला प्रशिक्षण आयुक्त एवं श्री रवि कुमार उप प्रधानाचार्य स्थानीय विद्यालय रहे।

सायं 04 बजे से शिविर का प्रथम/स्थानीय भ्रमण शुरू हुआ।

संभागियों को चामुण्डा देवी मंदिर के दर्शनार्थ ले जाया गया। चामुंडा देवी मंदिर एक प्राचीन मंदिर और हिमाचल प्रदेश राज्य के चंबा जिले में स्थित एक प्रमुख पर्यटक आकर्षण है। चामुंडा देवी मंदिर का निर्माण वर्ष 1762 में उम्मेद सिंह ने करवाया था। पाटीदार और लाहला के जंगल में बनेर नदी के तट पर स्थित यह मंदिर पूरी तरह से लकड़ी से बना है। यह मंदिर देवी काली को समर्पित है, जिन्हें युद्ध की देवी के रूप में जाना जाता है। पहले इस जगह पर केवल पत्थर के रास्ते काटे गए थे, लेकिन अब इस मंदिर के दर्शन के लिए 400 सीढ़ियां चढ़नी पड़ती हैं। वैकल्पिक रूप से 3 किलोमीटर लंबी कंक्रीट सड़क के माध्यम से आसानी से चंबा पहुंच सकते हैं।

चामुण्डा देवी मंदिर के पश्चात सभी संभागियों को नन्देश्वर महादेव धाम ले जाया गया। तत्पश्चात शनि मंदीर गये जहां सभी ने यहां स्नान किया। चामुंडा देवी का मंदिर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में बनेर नदी के तट पर स्थित है। यहां पानी

डलहौजी के पास बसा एक छोटा सा शहर है, जिसके हरे–भरे पेड़ों, झीलों और प्राकृतिक खूबसूरती को देख सभी मंत्रमुग्ध हो गये। 6,500 फीट की ऊंचाई पर बसा खाज्जिअर अपने नौ–छेद वाले गोल्फ कोर्स के लिए जाना जाता है, जो दिल जीत लेने वाली हरियाली और बेहद सुंदर परिदृश्य के बीच में स्थित है। यहां एक छोटी सी झील है जो सबसे पसंदीदा पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां का मौसम, चीड़ और देवदार के ऊंचे–लंबे हरे–भरे पेड़, अचानक होती बारिश और कोहरे की धूंध में लिपटे इस शहर ने सभी संभागियों को जैसे जन्नत की सैर करवा दी। शायद यही वजह है कि इसे भारत का मिनी–स्विट्जरलैंड कहा जाता है। यहां की खूबसूरती से आकर्षित होकर खुद स्विस राजदूत ने 7 जुलाई, 1992 को इसे मिनी स्विट्जरलैंड की उपाधि दी थी।

अत्यन्त शीतल लेकिन सुकूनदायक है। सभी संभागियो ने यहां स्नान किया।

द्वितीय दिवस 11.06.2024/16.06.2024 –

आज के दिन स्थानीय भ्रमण में सुबह 06 बजे बैस केम्प से रवानगी ली गई और गोपालपुर चिड़ियाघर, टी गार्डन, नोनेस्ट्री, गुरूद्वारा, सिद्ध गुफा आदि स्थानीय पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया गया। आज शाम माननीय राज्य आयुक्त महेन्द्र पारख सेवानिवृत भा.प्र.से. एवं राज्य संगठन आयुक्त श्री पूरण सिंह शेखावत द्वारा रात्रि केम्फायर में जीवनोपयोगी आशीर्वचन दिया गया।

गोपालपुर चिड़ियाघर भारत में हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के गोपालपुर गांव में धर्मशाला – पालमपुर रोड पर स्थित है। यह हिमालय की धौलाधार श्रृंखला से घिरा हुआ है। चिड़ियाघर को मेपल के पेड़, हॉर्स चेस्टनट के पेड़, चिल और हरियाली से सजाया गया है।

टी गार्डन – दरअसल ऐसा कहा जाता है कि लगभग 2000 साल पहले बौद्ध भिक्षु चाय की पत्तियों को इसलिए खाते थे ताकि वे अपनी तपस्या आसानी से कर पाएं, क्योंकि पत्तियां को खाने के बाद वे काफी देर तक जगने में सक्षम रहते थे। जिसके बाद 19वीं सदी के अंत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा पहला चाय का बागान शुरू किया गया था, वो देखा।

तत्पश्चात 300 साल पुरानी मोनेस्ट्री जिसे बौद्ध भिक्षु अंतरराष्ट्रीय धरोहर मानते हैं और इसे 1680 में मेराक लामा लोद्रे ग्यास्तो ने बनवाया तथा इसमें 570 से ज्यादा बौद्ध भिक्षु रहते हैं, के दर्शन कर गुरूद्वारा साहब के दर्शन करवाये। यहां से बेस केम्प लोटते हुए सभी ने सिद्ध गुफा में महादेव के दर्शन किए और सायं 7 बजे शिविर स्थल पर रिपोर्टिंग की गई।

तृतीय दिवस 12.06.2024/17.06.2024 –

आज के भ्रमण स्थल दूर होने से सुबह 04 बजे बैस केम्प से रवानगी ली गई और निम्नानुसार स्थानीय भ्रमण किया गया –

सर्वप्रथम संभागियों को खाज्जिआर ले जाया गया। खाज्जिआर

तत्पश्चात अंग्रेजों द्वारा 1854 में बसाए और विकसित किये गए तथा तत्कालीन वायसराय लॉर्ड डलहौजी के नाम से विख्यात डलहौजी की सैर की गई। धौलाधार पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित एक बहुत की खूबसूरत पर्यटक स्थल है। पांच पहाड़ों (कठलौंग, पोट्रेन, तेहरा, बकरोटा और बलुन) पर स्थित यह पर्वतीय स्थल चंबा जिले का हिस्सा है।

चतुर्थ दिवस 13.06.2024/18.06.2024 –

आज के दिन शिविर स्थल से भ्रमण स्थल काफी दूर होने से सुबह 04 बजे ही बैस केम्प से रवानगी ली गई और रात 9 बजे बैस केम्प पहुंचे। संभागियों को भागसुनाग, भागसु वाटर फॉल, मेकलियोडगंज, चर्च, कुणाल पत्थरी, शहीद स्मारक, धर्मशाला का प्रसिद्ध स्टेडियम व अघन्जर महादेव का भ्रमण करवाया गया।

भागसु वाटर फॉल – भागसुनाग मंदीर से 2 कि.मी. पैदल ट्रेकिंग कर पहाडी के ऊपर से वाटर फॉल के बेहद मनमोहक दृश्य का मजा लिया गया। सभी शिविरार्थियों ने वाटर फॉल का पूरे जोश और उमंग से लूत्फ उठाया और इन बेहद यादगार पलों को अपने अपने मोबाइल कैमरों में कैद किया।

वाटर फॉल के पश्चात सभी पहुंचे मैकलियोडगंज या मैकलियोडगंज, जो भारत के हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में

धर्मशाला का एक उपनगर है। इसे ''छोटा ल्हासा'' या ''धासा'' के नाम से जाना जाता है क्योंकि निर्वासित तिब्बती सरकार का मुख्यालय यहीं है और इस क्षेत्र में तिब्बतियों की एक महत्वपूर्ण आबादी है।

चर्च – 1852 में बनाया गया था, चर्च का निर्माण यहां रहने वाले ब्रिटिश सैनिकों के लिए किया गया था, और चर्च उन लोगों के स्मारक पत्थरों से भरा हुआ है जिन्होंने यहां अंतिम सांस ली थी। यह 1862–1863 से भारत के वायसराय लॉर्ड एल्गिन को समर्पित है। चर्च में दो शानदार ग्लास पैनल और घंटी हैं, और ये सब इंग्लैंड से लाया गया था।

कुणाल पत्थरी – जिस स्थान पर मां सती का कपाल गिरा था आज वह स्थान मां कुनाल पत्थरी के नाम से प्रसिद्ध है। यह स्थल मां के 51 शक्तिपीठों में से एक है।

शहीद स्मारक – शहीद स्मारक सात शहीदों की एक जीवन–आकार की मूर्ति है। इन युवाओं ने भारत छोड़ो आन्दोलन (अगस्त 1942) में अपने जीवन का बलिदान दिया था और उस भवन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया था जो अब सचिवालय भवन है।

इतनी ऊंचाई पर स्थित धर्मशाला स्टेडियम को देख सभी अचम्भित हो गये। यह एक क्रिकेट स्टेडियम है जो भारतीय राज्य हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला क्षेत्र में स्थित है। धर्मशाला तिब्बत के दलाई लामा के कारण जाना जाता है।

अघन्जर महादेव – अघंजर महादेव मंदिर में कैलाश जाते वक्त महाभारत काल के दौरान अर्जुन ने तपस्या की थी और उन्हें भगवान शिव शंकर ने दर्शन दिए थे और यहां से अपने साथ कैलाश ले गए थे, अर्जुन को दिव्य अस्त्र व शस्त्र प्राप्त हुए थे। अघंजर महादेव एक तीर्थ स्थल है। इस मंदिर में बाबा गंगा भारती व राजा रणजीत सिंह का प्रसंग भी जुड़ा है।

पंचम दिवस 14.06.2024/19.06.2024 –

आज शिविर का अन्तिम दिन था सुबह की शुरूआत में सर्वधर्म प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, इसके पश्चात अल्पाहार और सभी संभागियो को दी गई सामग्री जमा कराई गई। समापन कार्यक्रम करवाकर उपस्थिति, प्रमाण पत्र व हाइक बचत राशि वितरित की गई। दोपहर के भोजन के साथ शिविर का समापन किया गया। प्रस्थान के साथ सभी संभागियों को भोजन पैकेट देकर विदा किया गया।

हाईक की खास यादें –

1. राजकीय विद्यालय में अभुतपूर्व सुविधाएं।
2. उद्‌घाटन सत्र में जिलाधीश महोदय का उदबोधन।
3. रोवर रेंजर साहसिक शिविर में माननीय राज्य आयुक्त श्री महेन्द्र कुमार पारख एवं राज्य संगठन आयुक्त श्री पूरण सिंह शेखावत का आशीर्वाद।
4. भारत स्काउट व गाइड हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला के सभी पदाधिकारियों का अविस्मरणीय सहयोग।

CELEBRATIONS DAYS : JULY-AUGUST, 2024

11 July	:	World Population Day
22 July	:	National Flag Adoption Day
28 July	:	World Nature-Conservation Day
29 July	:	World Tiger Day
09 August	:	Indian Revolution Day
12 August	:	International Youth Day
13 August	:	Organ Donation Day
15 August	:	Independence Day
19 August	:	World Humanitarian Day
20 August	:	Sadbhavana Day
26 August	:	Women's Equality Day
29 August	:	National Sports Day

Plan an activity with your unit on these days and send your success stories & photos to "scoutguidejyoti@gmail.com"

सह शैक्षिक गतिविधियों में शामिल स्काउटिंग

अनुकम्पा अरडावतिया
प्रधानाचार्या
(प्रभारी सहा.जिला कमिश्नर गाइड)
स्थानीय संघ बुहाना झुन्झुनूं
राज.बालिका उच्च माध्य.विद्यालय
खानपुर मेहराना

इस सेवाभावी संगठन से छात्र-छात्राएं ही नहीं जोड़े जाते बल्कि एक शिक्षक, संस्था प्रधान अपने पदों के अनुरूप प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी योग्यता अभिवृद्धि करता है और विभिन्न उपाधियों को प्राप्त करता है।

संस्था प्रधान के लिए बेसिक कमिश्नर कोर्स है जिसका प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी योग्यता अभिवृद्धि करते हुए एडवान्स कोर्स करते हैं। एक बेसिक कोर्स स्काउटर गाइडर एडवांस कोर्स, हिमालय वुडबेज, एएलटी, एलटी उपाधियां प्राप्त करता हैं और प्रशिक्षक के रूप में कार्य करता हैं।

"हमारे मनीषियों का वेद वाक्य है,

"या विद्या सा विमुक्तए"

अर्थात विद्या वह है जो मुक्त करती है अज्ञानता से।

अतः हम कह सकते हैं कि मात्र शैक्षिक गतिविधियों के द्वारा हम बच्चों को पुस्तकीय ज्ञान देकर जिविकोपार्जन लायक बनाने में सक्षम है लेकिन बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सुयोग्य नागरिक बनाने में सक्षम नहीं है। ऐसी शिक्षा एकांगी होगी। अतः बालक के सर्वांगीण विकास एवं सुयोग्य नागरिक बनाने हेतु विद्यालय में सह शैक्षिक गतिविधियों का संचालन आवश्यक है।

इन प्रवृत्तियों के माध्यम से बालक में निहित विभिन्न शक्तियों को बाहर निकाल ने के अवसर मिलेंगे साथ ही मानसिक शारीरिक नैतिक सामाजिक मूल्यों का विकास भी करने में सक्षम होंगे।

यूं तो विद्यालय में संचालित सह शैक्षिक गतिविधियां अनेकों है जिनमें मुख्य रूप से विद्यालय में संचालित प्रवृतियां खेल कूद, बालसभा, संगीत, गायन, वाद–विवाद प्रतियोगिता, भाषण, सामान्य ज्ञान, उत्सव एवं जयन्तिया, वृक्षारोपण, एनएसएस, एनसीसी, स्काउटिंग गाइडिंग।

ऊपर वर्णित समस्त प्रवृतियां स्काउटिंग गाइडिंग में समाहित है। अतः स्काउटिंग गाइडिंग को इन सभी प्रवृत्तियों की जननी कहें तो अत्युक्ति नहीं होगी। स्काउटिंग के अतिरिक्त अन्य प्रवृतियां किसी एक उद्देश्य को पूरा करती है लेकिन स्काउटिंग गाइडिंग बालक की समस्त क्षमताओं को विकसित कर सर्वांगीण विकास कर विभिन्न विपरीत परिस्थितियों में जीने की कला सीखाती है साथ ही अनुशासित रह कर सेवा का पाठ भी पढ़ाती है।

इस गतिविधि द्वारा अनुशासन का प्रशिक्षण, नेतृत्व का विकास, चरित्र निर्माण, समानता, सहनशीलता की भावना श्रम के प्रति निष्ठा, स्वावलंबन, राष्ट्रीय एकता की भावना, पर्यावरण व पशु पक्षी प्रेमी आदि गुण बच्चों में समाहित किए जा सकते हैं।

स्काउटिंग विश्व आकाश पर फैली ऐसी संस्था है जो मानव मात्र ही नहीं पशु पक्षियों के कल्याण की प्रत्येक विषय वस्तु को गंभीरता से लेती है। स्काउटिंग शिक्षा का पूरक कार्यक्रम है। शिक्षा मात्र सूचनात्मक है जबकि स्काउटिंग उसे व्यावहारिक रूप प्रदान कर न्यूनतम साधन सुविधाओं में उच्च स्तरीय जीवन की कला प्रदान करती है इतना ही नहीं जहां कबिंग स्काउटिंग व रोवरिंग आयु वर्ग के अनुसार युवाओं तक मनोवैज्ञानिक व्यवहार आधारित व्यक्तित्व विकास की शिक्षा देने पर तत्पर व सक्रिय है वही ब्लू वर्ल्ड अर्थात बुलबुल गाइडिंग व रेंजरिंग बालिकाओं को भी समानांतर प्रणाली से ही सुनागरिकता की शिक्षा के द्वारा व्यवहारिक ज्ञान देने हेतु नारी सशक्तिकरण की दशा में क्रियाशील है।

अतः विद्यालय में अध्ययनरत बालक बालिकाओं के समग्र विकास के लिए देश के सुयोग्य सेवाभावी अनुशासित नागरिक तैयार करने के लिए स्काउटिंग गाइडिंग से जुड़ना आवश्यक है।

स्काउटिंग का संक्षिप्त इतिहास

स्काउटिंग के जन्मदाता लॉर्ड बेडेन पावेल है, जिन्होंने अपने सैन्य जीवन में विभिन्न पदों पर रहते हुए सैनिकों की कमी महसूस की और विचार किया...क्यों न बच्चों को नवयुवकों को जिनमें असीम शक्ति साहस है उन्हें इकट्ठा कर जासूसी चौकीदारी प्राथमिक सहायता पोस्टमैन पायनियरिंग आदि से प्रशिक्षित किया जाकर सेना के सीमित क्षेत्र से खींच कर जनसाधारण के बालक बालिकाओं तक लाने का प्रयास किया जाये? और उसमें सफलता भी प्राप्त की।

इस प्रकार 1907 में 20 बालकों को लेकर पहला कैंप ब्राउन सी आईलैंड में संचालित किया और सफल हुए। 1910 में उन्हीं की बहन एग्नेस ने सात लड़कियों से गर्ल गाइडिंग की शुरुआत की।

भारत में स्काउटिंग की शुरुआत

1909 में केटी और डेकर द्वारा भारत

में बेंगलुरु में स्काउटिंग का श्रीगणेश किया गया। 1911 में श्रीमती एनी बेसेंट द्वारा भारत में भी गाइडिंग की शुरुआत की गई। 1916 में संपूर्ण भारत में स्काउटिंग की शुरुआत हो गई।

आज पूरे विश्व में 216 देशों में स्काउटिंग संचालित है यह विश्व स्तर का आंदोलन है और विश्व का सबसे बड़ा युवा संगठन है जो यूनिफॉर्म में रहता है और प्राकृतिक आपदाएं हो या अन्य अवसर अपनी व दूसरों की सहायता करता है विकट परिस्थितियों में जीवन जीने की कला सिखाता है यह शैक्षिक आंदोलन है और स्वैच्छिक संगठन है। इसमें उत्तम नागरिकता का पाठ पढ़ाया जाता है खाली समय का सदुपयोग सिखाया जाता है प्रकृति से तालमेल भी सिखाता है।

एक सरकारी कर्मचारी अपनी सेवा के निश्चित 60 वर्ष पूरे करने पर सेवा से निवृत्त हो जाता है लेकिन इस सेवा संगठन से जुड़ा कार्मिक या सामान्य व्यक्ति आजीवन सेवा कार्य कर सकता है।

इस सेवाभावी संगठन से छात्र–छात्राएं ही नहीं जोड़े जाते बल्कि एक शिक्षक, संस्था प्रधान अपने पदों के अनुरूप प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी योग्यता अभिवृद्धि करता है और विभिन्न उपाधियों को प्राप्त करता है।

संस्था प्रधान के लिए बेसिक कमिश्नर कोर्स है जिसका प्रशिक्षण प्राप्त कर अपनी योग्यता अभिवृद्धि करते हुए एडवान्स कोर्स करते हैं। एक बेसिक कोर्स स्काउटर गाइडर एडवांस कोर्स, हिमालय वुडबेज, एएलटी, एलटी उपाधियां प्राप्त करता हैं और प्रशिक्षक के रूप में कार्य करता हैं।

विद्यालय स्काउटिंग का संचालन कैसे?

इसके लिए विद्यालय में ग्रुप का निर्धारण कर रजिस्ट्रेशन करवाना आवश्यक है जो स्थानीय स्तर पर ब्लाक लेवल अधिकारियों द्वारा किया जाकर राज्य स्तर पर अनुशंसा की जाकर चार्टर जारी किया जाता है। विद्यालय में स्काउटिंग गतिविधि चलाने के लिए किसी अध्यापक अध्यापिका का प्रशिक्षित होना आवश्यक है प्रशिक्षण हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण शिविर लगाए जाते हैं और ग्रुप संचालन के लिए सभी आवश्यक प्रशिक्षण दिया जाते है।

प्रशिक्षित स्काउटर गाईंडर द्वारा जिला मुख्यालय द्वारा जारी वार्षिक कैलेंडर के अनुसार निर्धारित प्रशिक्षण शिविर आयोजित किए जाते है जिसमें बालक बालिकाओं की रुचि और उत्साह के अनुसार, आयु वर्ग के अनुसार प्रशिक्षण दिया जाता हैं। आज अधिकांश विद्यालयों में कक्षा 1 से 12 तक कक्षाएं संचालित है और लगभग अध्ययनरत बच्चों की आयु 5 से 18 वर्ष तक होगी। उनको आयु वर्ग के अनुसार प्रशिक्षित किया जाता है 5 से 10 वर्ष तक आयु वाले बालक बालिका को कब व बुलबुल के रूप में प्रशिक्षित कर भरसक प्रयत्न करो का मूल मंत्र दिया जाता है 10 से 18 वर्ष तक आयु वाले बालक बालिकाओं को स्काउट और गाइड के रूप में प्रशिक्षित कर तैयार रहो का मूल मंत्र सिखाया जाता है। 16 से 25 आयु के बालक बालिकाओं को रोवर रेंजर के रूप में प्रशिक्षित कर सेवा का मूल मंत्र दिया जाता है तीनों आयु वर्ग के कब बुलबुल, स्काउट गाइड, रोवर रेंजर को विभिन्न चरणों व निश्चित अवधि में प्रशिक्षित किया जा कर प्रमाण पत्र, बेज, अलंकार, पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं कब बुलबुल के लिए सर्वोच्च पुरस्कार गोल्डन एरो हीरक पंख है स्काउट गाइड और रोवर रेंजर के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार सर्वोच्च पुरस्कार है जिस पर राष्ट्रपति महोदय स्वयं हस्ताक्षर करते हैं। इतना ही नहीं स्काउटिंग विश्व का ऐसा संगठन है जो सभी स्तर के क्रियाशील कार्मिकों को भी धन्यवाद बेज, बार टू मेडल ऑफ मेरिट, मेडल ऑफ मेरिट, सिल्वर स्टार, सिल्वर एलीफेंट जैसे राष्ट्रीय स्तर के अलंकरण से अलंकृत करता है।

राष्ट्रीय स्तर के प्रशिक्षण व गतिविधियों हेतु राशि भारत स्काउट गाइड द्वारा ही वहन की जाती है। अन्य गतिविधियों शिविरों आदि में भाग लेने वाले स्काउट गाइड के लिए राशि छात्र कोष से की जाने की अनुमति विभाग द्वारा दी हुई है। एसडीएमसी से भी प्रस्ताव लेकर व्यय किया जा सकता है।

भविष्य में स्काउट गाइड के लिए संभावनाएं

स्काउट गाइड का राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार प्राप्त स्काउट गाइड रेलवे भर्ती के लिए आवेदन करने हेतु पात्र हैं। स्काउट गाइड के लिए विभिन्न जोन में स्पेशल भर्ती निकाली जाती है, जिसमें स्काउट गाइड ही आवेदन कर सकते हैं। सर्कल ऑर्गेनाइजर जो हमारे जिले का प्रतिनिधित्व करते हैं उनकी नियुक्ति भी राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त स्काउट गाइड और स्नातक की डिग्री है वहीं छात्र पात्र होता है।

स्काउटिंग गतिविधि जिस विद्यालय में संचालित हैं और प्रशिक्षित स्काउटर गाइडर नियुक्त है वहां स्काउटर गाइडर को सामान्यीकरण से प्रथक रखा जाता है यदि हटाया जाना आवश्यक है तो उन्हीं विद्यालय में पदस्थापन किया जाता है जहां पर यह गतिविधि संचालित हो रही हो।

बच्चों में प्रारंभिक शिक्षा से ही अच्छा स्काउट गाइड बनाने के लिए जयपुर के जगतपुरा में बालचर आवासीय विद्यालय भी खोला गया है जिसमें राज्य के सभी जिलों के बालचर अध्ययनरत हैं। कक्षा 6 में प्रवेश लेकर यहां अध्ययनरत बच्चे यूनिफॉर्म में अध्ययन के साथ–साथ सेवा कार्य या स्काउट गाइड से जुड़ी हुई सभी गतिविधियों में भाग लेते हुए अध्ययनरत हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि स्काउटिंग उत्तम नागरिकता की पाठशाला है, एक शिक्षाप्रद खेल है, खाली समय का सदुपयोग है। यह प्रसन्नता दायक वातावरण प्रदान कर प्रकृति से तादात्म्य स्थापित कर पर्यावरण संरक्षण की प्रेरणा देती है।

जय भारत जय स्काउट

स्काउट की कलम से

जो लम्हे गुजारे साथ..

गोविन्द सिंह डागुर
उपप्राचार्य
रा.उ.मा.विद्यालय बाछरैन

मैं गोविंद सिंह डागुर धरसोंनी (उपप्राचार्य) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय बाछरैन में कार्यरत हूँ। विद्यार्थी जीवन में मैंने स्काउटिंग में राष्ट्रपति स्काउट पुरस्कार प्राप्त किया था किंतु उसके बाद से मेरी स्काउटिंग गतिविधि लगभग बंद हो गई थी। बेसिक स्काउट मास्टर कोर्स करने के बाद मेरी स्काउटिंग पुनः शुरू हुई। एक दिन भरतपुर मंडल मुख्यालय के सी.ओ. श्री देवेंद्र कुमार मीणा जी ने मुझे सूचित किया कि आबू पर्वत पर दिनांक 18 से 24 मई 2024 तक स्काउट यूनिट लीडर एडवांस कोर्स का शिविर आयोजित होने वाला है। यह सुनकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई और मैंने वहां भाग लेने का निश्चय किया। हम चार संभागी भरतपुर से आबू रोड पहुंचे और वहां से बस द्वारा माउंट आबू गौमुख तिराहे पर उतर गए। सामान के साथ जब हम प्रशिक्षण स्थल द्वितीय पर पहुंचे तो प्रथम दृष्टि में उस प्रशिक्षण स्थल को देखकर मन प्रसन्न नहीं हुआ। वहां तो कोई व्यवस्था ही नहीं। केवल जंगल और एकांत। स्नान आदि करके हमने यूनिफॉर्म पहनकर पंजीकरण कराया और ध्वज–स्थल पर सभी एकत्रित हुए कुल 10 टोलियाँ थी। जिन्हें दो भागों में बांटा गया। एक भाग के शिविर संचालक श्री विनोद दत्त जोशी (एलटी) एवं दूसरे भाग के संचालक श्री शैलेश कुमार पलोड़ (एलटी) थे।

प्रथम दिवस में टेंट का बंटवारा किया गया। टोली परिचय, प्रशिक्षण दल का परिचय, दैनिक कार्यक्रम, शिविर नियम तथा सेवा कार्य के बारे में बताया गया। अनजान लोगों के साथ एक टेंट में रहना व उनके साथ सामंजस्य बैठाना अजीब तो लगता ही है। कुल मिलाकर प्रथम दिवस सब कुछ अजीब ही लगा।

प्रथम दिवस की अर्धरात्रि को भालू कैम्प में आ गया। जंगली भालू हिंसक भी हो सकता है। पहरा देने वाली टोली ने शोर मचा दिया। हड़बड़ाहट में नींद खुल गयी। रात्रि डर में कटी। वह भालू लगभग हर रोज आया। दूसरे दिन से आनंद का आरंभ हुआ 7 बजे तक निर्बाध सोने वाले हम लोग प्रातः 5:55 पर बीपी सिक्स के लिए तैयार थे। चारों ओर वादियाँ और उनसे बहती शीतल हवा, इस जून के माह में भी मन मयूर नाचने को विवश हो गया। बीपी सिक्स के बाद यूनिफार्म के साथ फ्लैग सेरेमनी और नाश्ते के बाद ले आउट, निरीक्षण आदि से पुराने छात्र जीवन वाले दिन याद आ गए।

कक्षाएं शुरू हुई कक्षा का स्थल पहाड़ की एक तलहटी, जिसमें घने आम के वृक्षों की सघन छाया थी। आनंद का प्रवाह अब अनवरत था। कक्षाएं शुरू होती गीतों से. . श्री सुभाष पारीक जी का एक गीत गुंजित होता, 'खींचो रे भैया –खींचो रे भैया जल्दी पार जाना है..' । लगता जैसे शाम ढलने को है और हम सब माँझी स्वर्ण–पीत जल–राशि में नाव खेह रहे हैं। सच है व्यक्ति जीवन की नाव को खेहता है और शाम का सुहाना मौसम हमें जल्दी–जल्दी अपने कर्तव्य पूर्ण करने का संदेश देता है। दिन प्रतिदिन टोली के सदस्यों से हम प्रगाढ़ होते गए। स्काउटिंग का इतिहास, स्वरूप, गांठे लगाना, पट्टी बांधना, स्ट्रेचर बनाना, प्राथमिक सहायता, मानचित्र व कंपास, चिन्ह, विभिन्न प्रतियोगिताएं, तंबू लगाना, ब्रिज बनाना, वॉचिंग टावर बनाना आदि आदि अनेक प्रशिक्षण हमने प्राप्त किये। दोपहर एसटीए के लिए तैयार होना भी रोमांच से कम नहीं था। शाम को कोई एक खेल हमें बचपन में पहुँचा देता।

शिविर का कार्यक्रम इतना समयबद्ध था कि साथियों की पत्नियाँ परेशान हो गईं। मोबाइल से बातें लगभग

शेष पृष्ठ सं. 24 पर

गतिविधि दर्पण

प्रदेश में विभिन्न स्तरों पर आयोजित शिविरों, गतिविधियों इत्यादि की संक्षिप्त रिपोर्ट

अजमेर

◈ भारत स्काउट व गाइड, भीलवाड़ा के तहत राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सुभाष नगर में संचालित स्काउट ट्रुप, गाइड कंपनी, बुलबुल फ्लॉक, कब पैक के संयुक्त तत्वावधान में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण तथा पॉलीथिन बहिष्कार पर 14 जून को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चित्तौड़ प्रांत कार्यवाह एवं पूर्व अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी शंकर लाल माली के मुख्य आतिथ्य, सहायक राज्य संगठन आयुक्त विनोद दत्त जोशी की अध्यक्षता तथा उप प्रधान स्काउट गाइड स्थानीय संघ भीलवाड़ा मदनलाल शर्मा एवं प्रधानाचार्य उर्मिला जोशी के विशिष्ट आतिथ्य में जन जागरूकता कार्यक्रम विद्यालय प्रांगण में आयोजित हुआ। कार्यक्रम संचालक सहायक लीडर ट्रेनर (स्काउट) प्रेम शंकर जोशी ने बताया कि कार्यक्रम में

स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, पॉलीथिन बहिष्कार के स्लोगन लिखे कैनवास के बैग सभी संभागियों को वितरित करने के बाद मुख्य अतिथि ने कहा कि स्काउट गाइड स्वच्छता, समाज सेवा, विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन हेतु जन जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से राष्ट्र निर्माण में अपनी महत्ती भूमिका निभाते हैं। अध्यक्षीय उद्‌बोधन में श्री जोशी ने बताया कि स्काउट गाइड सेवा के लिए तत्पर रहते हुए विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से श्रेष्ठ आचरण, ईमानदारी, साहस, धैर्य, कर्तव्यनिष्ठा, वफादारी आदि नैतिक मूल्यों को जीवन में उतारते हुए, सुनागरिक बनकर देश की सेवा के लिए अपने आप को तैयार करते हैं। इस अवसर पर गाइड कैप्टीन संगीता व्यास एवं फ्लॉक लीडर मंजू शर्मा के नेतृत्व में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, पॉलीथिन बहिष्कार के प्रति जनसाधारण को जागरूक करने हेतु जन जागरूकता रैली का आयोजन किया गया, जिसे अतिथियों ने हरी झंडी दिखाकर विद्यालय प्रांगण से रवाना किया। इससे पूर्व अतिथियों के आगमन पर गार्ड ऑफ ऑनर से स्वागत किया गया तथा तिलक लगाकर, मेवाड़ी पगड़ी पहनाकर, ऊपरना धारण कराके, स्मृति चिन्ह प्रदान करते हुए सभी अतिथियों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में व्याख्याता शारीरिक शिक्षा सुनील खोईवाल, वरिष्ठ अध्यापक परमेश्वर शर्मा, एडवांस गाइडर रेखा जाट, सीनियर स्काउट उमेश मेघवंशी, सुमित शर्मा, सीनियर रोवर फुरकान, रेंजर प्रिया स्वर्णकार सहित लगभग 101 स्काउट, गाइड, रोवर, रेंजर, कब, बुलबुल उपस्थित थे।

बीकानेर

◈ भारत स्काउट व गाइड, मंडल मुख्यालय, बीकानेर द्वारा विश्व तंबाकू निषेध दिवस पर 31 मई को अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय गुरुद्वारा में मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी महेंद्र कुमार शर्मा एवं मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. लोकेश गुप्ता के आतिथ्य में विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें

कौशल विकास शिविर के संभागी ने तंबाकू एवं धूम्रपान पर आधारित नाटक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का मंचन किया। मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी ने बताया कि विद्यार्थियों को गलत संगत में नहीं पड़ना चाहिए। नशे की लत जीवन की सबसे बड़ी बाधा है। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी लोकेश शर्मा ने विद्यार्थियों को तंबाकू के सेवन से होने वाले दुष्प्रभाव पर अपनी वार्ता प्रस्तुत की तथा किस प्रकार नशे से बचा जा सकता है इस विषय पर जानकारी दी। नशा मुक्ति की शपथ भी चिकित्सा अधिकारी द्वारा दिलवाई गई। इसी प्रकार राजकीय बांठिया बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय भीनासर में भी मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी महेंद्र कुमार शर्मा ने विद्यार्थियों को नशा मुक्ति के लिए समाज को जागरूक करने की प्रेरणा प्रदान की। संस्था प्रधान सूरज रतन सोनी ने सभी का आभार व्यक्त किया। विद्यार्थियों ने पोस्टर प्रतियोगिता के माध्यम से तंबाकू सेवन न करने के संदेश दिए। डॉ. राजेंद्र बिश्नोई ने नशा मुक्ति अभियान को व्यापक बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। सी.ओ स्काउट जसवंत सिंह राजपुरोहित के अनुसार सिलाई, मेहंदी, चित्रकला, सौंदर्य प्रसाधन, इंग्लिश स्पोकन, कंप्यूटर आदि का प्रशिक्षण कौशल

विकास शिविर में 25 जून तक दिया जा रहा है, जिसमें दक्ष प्रशिक्षकों द्वारा यह विषय सिखाए जा रहे हैं। तंबाकू निषेध दिवस पर हनुमान दान, अंजुमन आरा, धनवंती, प्रभु दयाल गहलोत, भवानी शंकर राजपुरोहित, महेश किराडू, रविप्रकाश चाहर, ज्योति प्रजापत, रितू गौड़ आदि ने सहयोग प्रदान किया।

जयपुर

- भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ, रामनिवास बाग जयपुर के तत्वावधान में 5 मई 2024 को परिंडा अभियान का शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम में प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर श्री गिर्राज पारीक, स्थानीय संघ के अध्यक्ष श्री विष्णु कुमार गुप्ता, सचिव श्री जगदीश नारायण शर्मा, संयुक्त सचिव सुश्री अनीता सिंह, कोषाध्यक्ष मोहम्मद इरशाद खान एवं स्थानीय संघ के

अन्य स्काउटर गाइडर द्वारा स्थानीय संघ मुख्यालय एवं आसपास के क्षेत्र में 51 परिंडे लगाएं गए। प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर श्री गिर्राज पारीक ने स्थानीय संघ के सभी ग्रुपों से ग्रीष्मकाल के दौरान बेजुबान पक्षियों एवं जानवरों हेतु दाना पानी की व्यवस्था करने का आग्रह किया।

- भारत स्काउट व गाइड, स्थानीय संघ, बस्सी की गाइड कम्पनी राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय माधोगढ (तूंगा) में दिनांक 17 मई से 17 जून 2024 तक रोटरी क्लब जयपुर, बापू नगर के आर्थिक सहयोग से ग्रीष्मकालीन अभिरूचि शिविर का आयोजन किया गया। प्रधानाचार्य, ट्रुप लीडर एवं सहायक जिला कमिश्नर शिव शंकर प्रजापति ने

जानकारी दी की ग्रीष्मकालीन अभिरूचि शिविर में ड्रेस डिजाइनिंग, वाद्य यंत्र वादन, कंठ संगीत, ब्यूटी एण्ड वेलनेस, आर्ट एण्ड क्राफ्ट, वाचनालय एवं डिजिटल लर्निंग सहित 7 ट्रेड रखे गए थे।

दिनांक 7 जून 2024 को राजस्थान राज्य भारत स्काउट व गाइड के राज्य सचिव एवं स्काउट गाइड ज्योति के संपादक डॉ. पी.सी. जैन ने शिविर का अवलोकन किया। सचिव को विद्यालय के मुख्य द्वार पर मांगलिक तिलक के साथ गाइड्स ने गार्ड ऑफ ऑनर दिया। सचिव ने प्रत्येक ट्रेड में नर्मित सामग्री एवं अधिगम कौशलों का निरीक्षण किया एवं उन्हें बालिकाओं के करियर में आत्मनिर्भरता की दिशा में एक मील का पत्थर बताया। विद्यालय में किये जा रहे नवाचारों की सचिव ने भूरी–भूरी प्रशंसा की। इस अवसर पर विद्यालय की 11 गाइड्स को सचिव ने अपने कर कमलों से तृतीय सोपान के प्रमाण पत्र भी वितरित किए। गाइड मोहिनी सैनी, प्रियंका शर्मा, आँचल महावर को फ्री बीइंग मी के बैज, खुशी मेहरा को नर्सिंग बैज, कोमल महावर व संजना सैनी को सिटीजन के बैज प्रदान किए। इस अवसर पर गाइड्स ने रेड डाटा बुक, पाइनियरिंग, गैजेट्स, अन्तर्राष्ट्रीय ऊंट वर्ष 2024 एवं गाइड्स द्वारा तैयार कलाकृतियों की भव्य प्रदर्शनी भी आयोजित की गयी, जिसमें गाइड्स ने अपनी मौलिक अभिव्यक्ति दी। गाइड्स के पाँचवे नियम की पालना में शिविर के प्रतिभागियों को गोरैया चिडियां के घोंसले एवं पक्षी परिंडे भी वितरित किए गए।

जोधपुर

- विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी पाली एवं जिला मुख्य आयुक्त चंद्र प्रकाश जायसवाल ने बजरंग बाड़ी स्थित स्काउट प्रशिक्षण केंद्र में वृक्षारोपण किया। जिला मुख्य आयुक्त द्वारा प्रशिक्षण केंद्र उद्यान में बरगद, चीकू, जामुन, निम्बू और आम आदि के छायादार और फलदार वृक्ष लगाए। वृक्षारोपण से पूर्व स्काउट गाइड यूनिट लीडर ने प्रशिक्षण केंद्र पर सामुहिक रूप से श्रमदान किया। शारदा विधा मंदिर में आयोजित अभिरुचि शिविर में पोस्टर प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित किया गया तथा स्काउट गाइड द्वारा पर्यावरण संरक्षण विषय

पर तैयार गीत पर प्रस्तुति दी गयी। इस अवसर पर सी.ओ स्काउट गोविन्द मीना, सी.ओ गाइड डिम्पल दवे, शिविर संचालक दौलत सिंह, वीरम देव, रमेश संपेला, संजय सेन, प्रदीप शर्मा, कैलाश कुमार, जयपाल सिंह, घीसा राम, हिम्मत पटेल, नसीम बानो, अशोक चौहान, नारायण बालवंशी, गौरव कालानी, मूलाराम पंवार आदि उपस्थित रहे।

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, पाली द्वारा संचालित ग्रीष्मकालीन अभिरुचि एवं कला कौशल शिविर मधुरम् विद्या मन्दिर उच्च माध्यमिक विद्यालय पुनायता रोड पाली में विश्व पर्यावरण दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें शिक्षा विभाग सहित विभिन्न पदाधिकारियों ने शिरकत की। कार्यक्रम की शुरुआत श्री प्रवीण जांगिड़ अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी एवं श्री तुलसी राम चौहान अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी निदेशक कार्यालय पाली द्वारा रैली को हरी झंडी दिखा कर रवाना किया गया। संभागियों ने पूर्ण उत्साह से पर्यावरण संरक्षण के नारे लगाए एवं जनमानस में पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया। तत्पश्चात श्री तुलसी राम चौहान द्वारा वेस्ट तो बेस्ट विषय पर व्यख्यान दिया और प्लास्टिक के कम से कम उपयोग पर बल दिया गया।

◈ भारत स्काउट गाइड जिला मुख्यालय पाली के तत्वावधान में दिनांक 17 मई से 24 जून 2024 तक आयोजित ग्रीष्मकालीन अभिरुचि शिविर का 22 जून को समारोह पूर्वक समापन हुआ। सी.ओ. गाइड डिम्पल दवे ने बताया कि शारदा बाल मंदिर उच्च माध्यमिक विद्यालय राजेंद्र नगर पाली में आयोजित हुए इस अभिरुचि शिविर में 124 संभागियों ने विभिन्न विधाओं का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर संचालक एवं स्थानीय संघ

रोहट के सचिव दौलत सिंह राठौड़ ने बताया की इस शिविर में भाग ले रहे संभागियों को ग्रीष्मावकाश में जीवनोपयोगी एवं रोजगार परक शिक्षा से जुड़ाव एवं ग्रहणियों और बालिकाओं को सिलाई, ब्यूटीशियन, मेहंदी, नृत्य कला, संगीत आदि कलाओं का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

समापन समारोह कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि राजकीय बांगड़ उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली के प्रधानाचार्य और प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर स्थानीय संघ पाली बसंत कुमार परिहार ने अपने उद्‌बोधन में कहा की इस प्रकार के शिविरों के आयोजन से बालक बालिकाओं के दिनचर्या में अनुशासन उत्पन्न होता है तथा जीवनोपयोगी कलाओं से रूबरू होते हैं। उन्होंने युवाओं को स्वावलंबी बनाने के लिए अभिरुचि शिविर को सबसे मददगार माध्यम बताया, ऐसे कार्यक्रमों से जुड़कर स्वयं का व्यवसाय स्थापित करने के लिए प्रेरित किया तथा जीवन में छोटी से छोटी कला को भी सीख कर जीवन को बेहतर बनाने बाबत सभी को मार्गदर्शन प्रदान किया। सी.ओ. स्काउट गोविन्द मीना ने बताया कि शिविर में तंबाकू निषेध दिवस एवं विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित हुई प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले संभागियों को प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया तथा प्रशिक्षण प्रदान करने वाले ट्रेनर्स को सर्टिफिकेट और मोमेंटो प्रदान कर प्रोत्साहित किया।

विद्यालय के व्यवस्थापक वीरम देव जोशी ने शिविर में प्रशिक्षण प्रदान करने वाले स्टाफ दौलत सिंह, संजय कुमार, दीपेंद्र प्रताप सिंह, मूलाराम पंवार, वीरेंद्र सिंह शेखावत, गौरव कालानी, अशोक चौहान, नारायण लाल बालवंशी, भगवान सिंह, देवेंद्र कुमार, जयपाल सिंह, श्रीमती लक्ष्मी बालवंशी, सुगना वैष्णव, भूमिका, कोमल लखारा, पूनम जोशी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर पाली बसंत परिहार, सी.ओ. स्काउट गोविंद मीणा और सी.ओ. गाइड डिंपल दवे द्वारा मां सरस्वती की तस्वीर पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की गई। शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाली बालिकाओं द्वारा स्वागत गीत और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए। संगीत कला के प्रशिक्षक और जम्बुरी गीत में मुख्य गायक अशोक चौहान द्वारा तैयार करवाया गया जंबुरी गीत भी बालक बालिकाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया।

कोटा

◈ भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, कोटा के तत्वावधान में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर डायमंड सीनियर सैकेंडरी स्कूल विनोबा भावे नगर, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय आवासन मंडल, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय नयागांव में संचालित कला कौशल प्रशिक्षण शिविर के बालक

बालिकाओं एवं स्काउट गाइड को पर्यावरण की जानकारी प्रदान करने के लिए बायोलॉजिकल पार्क एवं अभेड़ा महल का भ्रमण करवाया गया। सी.ओ. स्काउट कोटा बृज सुंदर मीणा ने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर स्काउट गाइड को प्रकृति एवं वन्य जीवों का अवलोकन करवाया। इसी के साथ ही वन विभाग के अधिकारियों ने बायोलॉजिकल पार्क के जीव जंतुओं एवं प्रकृति के बारे में स्काउट गाइड को विस्तार से जानकारी प्रदान की। इसी दौरान स्काउट गाइड परिवार द्वारा वन विभाग के अधिकारियों को स्कार्फ पहनाकर धन्यवाद ज्ञापित किया। बायोलॉजिकल पार्क में पौधे लगाए गए एवं पक्षियों के लिए परिंडे बांधे गए। इस अवसर पर नारा लेखन, पोस्टर प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गई, जिसमें मंडल मुख्यालय कोटा के सहायक राज्य संगठन आयुक्त दिलीप माथुर ने विश्व पर्यावरण दिवस के बारे में बालक बालिकाओं को विस्तार से जानकारी दी।

यज्ञ दत्त हाड़ा ने कार्यक्रम का संचालन किया एवं प्रकाश जायसवाल सचिव स्थानीय संघ, कोटा दक्षिण ने बालक बालिकाओं को पर्यावरण बचाने के लिए शपथ दिलवाई। शिविर संचालक श्री इंद्राज दाधीच ने बालकों को पर्यावरण संबंधी नाटक, खेल, जादू दिखा कर पर्यावरण को बचाने का संदेश दिया। डायमंड सीनियर सेकेंडरी स्कूल के निदेशक गिर्राज राठौर द्वारा बालक बालिकाओं को पारितोषिक देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सहयोग के रूप में केशव शर्मा, प्रवीण शर्मा, श्रीमती अंजू सोरल, भावना गुप्ता ने कार्यक्रम में सहयोग प्रदान किया।

- भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, बारां एवं भारतीय सांस्कृतिक निधि वराह नगरी बारां के तत्वावधान में आयोजित ग्रीष्मकालीन अभिरुचि एवं कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर मे मांडणा प्रतियोगिता आयोजित की गई। भारतीय सांस्कृतिक निधि वराह नगरी बारां अध्याय के जिला कन्वीनर जितेंद्र कुमार शर्मा ने कहा कि राजस्थानी मांडनों का अपना अलग वैशिष्ट्य है, ये जहां हमारी लोक संस्कृति को सर्वसम्मत बनाते हैं वहीं मानव समुदाय में वास्तु, स्थान, रीति रिवाज और पर्वों, तीज त्यौहारों को समृद्ध बनाते हैं। अंतर्राष्ट्रीय मांडना कलाकार और लोक संस्कृति कर्मी श्रीमती कौशल्या देवी शर्मा ने विश्व पटल पर इस विरासत को पहुंचा कर बारां का नाम रोशन किया है और इंटेक बारां चौप्टर द्वारा आने वाली पीढ़ी को इस कला से रूबरू कराए जाने के लिए उनके 140 मांडनों को सरंक्षित कर लिया है। शिविर में इंटेक कन्वीनर और सदस्यों के सान्निध्य में मांडना प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सी.ओ. स्काउट प्रदीप चित्तौड़ा ने बताया कि मांडना अपने आप में वराह नगरी की एक अमूल्य धरोहर है। इस अवसर पर जिला हैडक्वार्टर कमिश्नर भेरूलाल वर्मा ने सांस्कृतिक धरोहर पर एक सुंदर कविता सुनकर सभी को धरोहरों से जोड़ने का प्रयास किया। जितेंद्र कुमार शर्मा ने रामगढ़ क्रेटर एवं बारां जिले की समस्त धरोहरों के बारे में सभी संभागियो को विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर शिविर संचालक शकील खान द्वारा स्काउट गाइड द्वारा संचालित शिविरों की जानकारी देते हुए बताया कि शिविर समाप्ति के अवसर पर शिविर में बनाई गए सामग्री एवं विभिन्न अवसरों पर आयोजित प्रतियोगिताओं के पोस्टर एवं मांडने को आमजन के लिए प्रस्तुत किया जाएगा। प्रधानाचार्य राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय भीमगंज वार्ड उमेश गोदानिया ने कहा कि वास्तव में स्काउट गाइड संगठन एक बालक बालिका को स्वावलंबन बनाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

उदयपुर

- भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, उदयपुर के करीब 451 कब, बुलबुल, स्काउट, गाइड, रोवर, रेंजर और उनके प्रभारियों व सी.ओ. स्काउट एवं गाइड उदयपुर मण्डल सुरेन्द्र कुमार पाण्डे एवं विजय लक्ष्मी वर्मा के नेतृत्व में उदयपुर जिला प्रशासन एवं आयुर्वेद विभाग के तत्वावधान में गांधी ग्राउण्ड पर आयोजित 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर भाग लिया। श्री पाण्डे ने जानकारी देते हुए बताया कि अंतर्राष्ट्रीय

योग दिवस के अवसर पर गांधी ग्राउण्ड में करीब 451 स्काउट्स गाइड्स ने उनके प्रभारियों के साथ बढ़ चढ़कर हिस्सेदारी निभाई। इस अवसर पर सी.ओ. गाइड विजय लक्ष्मी वर्मा सी.ओ. गाइड, सैम्युल फ्रांसिस सचिव एवं किरण पोखरना संयुक्त सचिव, स्थानीय संघ, उदयपुर सहित स्थानीय संघ उदयपुर के स्काउटर्स, गाइर्डस ने भाग लिया।

◈ भारत स्काउट एवं गाइड, जिला मुख्यालय, उदयपुर के तत्वावधान में आयोजित ग्रीष्मकालीन अभिरुचि शिविर द विजन एकेडमी स्कूल में 17 मई 2024 से संचालित किया जा रहा था। अभिरुचि शिविर का समापन समारोह द विजन एकेडमी स्कूल उदयपुर के केंद्रीय सभागार में 23 जून को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। शिविर प्रभारी उदयपुर सी. ओ. गाइड विजयलक्ष्मी रोहिला ने बताया कि शिविर में विभिन्न गतिविधियों जैसे संगीत, चित्रकला, आर्ट एंड क्राफ्ट, इंग्लिश स्पोकन, गणित, मेहंदी डिजाइन, क्ले आर्ट, योग, नृत्य, सिलाई एवं सौंदर्य प्रसाधन कला सहित विभिन्न गतिविधियां संचालित की जा रही थी। समापन समारोह में मुख्य अतिथि द विजन एकेडमी स्कूल की प्रधानाचार्य डॉ.

प्रतिमा सामर तथा आर.एम.वी. ट्रस्टी श्रीमती प्रभा नागर रही। समारोह का शुभारंभ संगीतमय सरस्वती आराधना से किया गया। इस अवसर पर 150 प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र एवं उपहार देकर सम्मानित किया गया। श्रीमती रोहिला ने बताया कि स्काउट गाइड राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानव सेवा के कार्यों को बहुत निष्ठा के साथ करते हैं तथा विद्यार्थियों के चारीत्रिक उन्नयन के लिए भी सदैव प्रयासरत रहते हैं। शिविर के दक्ष प्रशिक्षकों को भी उनके उत्कृष्ट कार्य हेतु प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। समापन समारोह में विभिन्न गतिविधियां जैसे नृत्य, संगीत प्रस्तुति, फैशन डिजाइनिंग, कॉन्टैस्टी गणित पर आधारित प्रतियोगिता आदि का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विभिन्न संकायों की एक प्रदर्शनी भी आयोजित की गई, जहां पर अभिभावकों एवं छात्रों ने अभिरुचि शिविर के दौरान निर्मित कलाकृतियों का अवलोकन किया। अभिरुचि शिविर का संचालन एवं संयोजन उमेश माली तथा देव रावत द्वारा किया गया।

◈ जिला मुख्यालय राजसमन्द के समीप स्थित रा.बा.उ.मा. विद्यालय कांकरोली में भारत स्काउट व गाइड, जिला मुख्यालय, राजसमन्द, शिक्षा विभाग राजसमन्द एवं स्थानीय संघ, राजसमन्द के संयुक्त तत्वावधान में चल रहे 40 दिवसीय अभिरुचि कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर का 22 जून को रंगारंग कार्यक्रम के साथ समापन हुआ। समारोह में प्रशासनिक अधिकारी व जनप्रतिनिधियों के द्वारा प्रदर्शनी का उद्घाटन व अवलोकन किया गया।

शिविर संचालक धर्मेन्द्र गुर्जर ने बताया कि 17 मई से 25 जून तक संचालित अभिरुचि कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर का समापन राजकीय बाल कृष्ण विद्या भवन कांकरोली के प्रांगण में रंगारंग कार्यक्रम के साथ आयोजित किया गया। समापन समारोह ''झलक–2024'' की अध्यक्षता शिविर निर्देशक एवं सी.ओ. गाइड अभिलाषा मिश्रा ने की। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी राजसमन्द के जिलाध्यक्ष मानसिंह बारहठ, विशिष्ट अतिथि के रूप में सी.ई. ओ. जिला परिषद राजसमन्द हनुमान सिंह राठौड़, राजसमन्द तहसीलदार विजय, जिला किसान मोर्चा के अध्यक्ष जवाहर जाट, खुशकमल कुमावत, नर्बदा शंकर पालीवाल, पूर्व जिला प्रशिक्षण आयुक्त स्काउट रामचन्द्र शर्मा थे। समापन समारोह

पर पूरे शिविर की मुख्य धुरी रहे विभिन्न विषयों के प्रशिक्षक एवं संचालक दल के सदस्य जिनमें अभिलाषा मिश्रा शिविर निर्देशक, धर्मेन्द्र गुर्जर शिविर संचालक, कुलदीप चौधरी सहायक शिविर संचालक, रोशन लाल रेगर कार्यलय प्रभारी, लीलाधर पालीवाल योग प्रशिक्षक, चंद्रशेखर पालीवाल इंगलिश स्पोकन प्रशिक्षक, माधव जटिया कम्प्युटर प्रशिक्षक, नेहा कुमावत डान्स प्रशिक्षक, ऋतिका कुमावत सॉफ्ट टॉयज, मेकिंग व इंटिरियर डेकोरेशन प्रशिक्षक, संध्या भाटिया मेहन्दी प्रशिक्षक, दारा सिंह स्केटिंग प्रशिक्षक, टीना साहु ब्युटिशियन प्रशिक्षक आदि संचालक सदस्यों को भी अतिथि महानुभावों के कर कमलों से प्रशंसा पत्र व प्रतीक चिन्ह से नवाजा गया। अन्त में आभार व्यक्त चन्द्रशेखर पालीवाल ने किया।

◈ जिला मुख्यालय, चित्तौड़गढ़ के तत्वावधान में दिनांक 17 मई से 25 जून 2024 तक महात्मा गॉधी राजकीय विद्यालय स्टेशन चित्तौड़गढ़ एवं श्री कालिका ज्ञान केन्द्र मा.वि. प्रतापनगर चित्तौड़गढ़ पर संचालित जिला स्तरीय अभिरूचि एवं कौशल विकास प्रशिक्षण शिविर का समापन समारोह 22 जून को विद्यालय परिसर के हॉल में किया गया। इससे पूर्व 21 जून 2024 को अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर शिविर के संभागियों ने स्काउट–गाइड, रोवर–रेंजर एवं स्काउटर गाइड के साथ जिला स्तरीय कार्यकम में सहभागिता कर योग का प्रशिक्षण प्राप्त किया। अतिथियों का स्कार्फ पहनाकर एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया गया।

समापन समारोह की अध्यक्षता लीडर ट्रेनर इन्द्र लाल आमेटा ने की एवं विशिष्ट अतिथि के रूप में स्थानीय संघ चित्तौड़गढ़ सचिव पंकज दशोरा, पूर्व सचिव राजकुमार सुखवाल, जिला हैडक्वार्टर कमिश्नर (कार्यक्रम–क्रियान्वयन) अखिलेश श्रीवास्तव एवं जिला हैडक्वार्टर कमिश्नर (प्रचार–प्रसार) अमित कुमार चेचानी उपस्थित रहे। शिविर संचालिका शीला दशोरा ने बताया कि प्रदर्शनी में संभागियों द्वारा सिलाई, मेंहदी, ड्राइंग, कम्प्यूटर में निर्मित सामग्री व पोस्टर का प्रदर्शन किया गया। मच संचालक हेमन्त कुमार पुरोहित ने बाताया कि शिविर के अन्तर्गत 31 मई को विश्व तम्बाकू निषेध दिवस एवं 05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

- वन विभाग डूंगरपुर एवं भारत स्काउट एवं गाइड, जिला मुख्यालय, डूंगरपुर के संयुक्त तत्वावधान में शहर के राजकीय महारावल उच्च माध्यमिक विद्यालय डूंगरपुर में चल रहे ग्रीष्मकालीन अभिरुचि शिविर में विश्व पर्यावरण दिवस 2024 के अवसर पर मुख्य अतिथि जिला कलक्टर अंकित कुमार सिंह, विशिष्ट अतिथि कुलदीप सूत्रकार, अपर जिला एवं सेशन जज अतिरिक्त सचिव विधिक सेवा जिला प्राधिकरण डूंगरपुर अध्यक्ष रंगास्वामी ई., उपवन संरक्षक डूंगरपुर कुलदीप क्षेत्रीय अधिकारी, राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल बांसवाड़ा के आथित्य में आयोजित किया गया। जिला कलक्टर ने शिविर में उपस्थित समस्त स्काउट गाइड को पर्यावरण संरक्षण का महत्व बताया। कार्यक्रम में मेहन्दी प्रतियोगिता, पोस्टर प्रतियोगिता, क्विज प्रतियोगिता के

माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का सन्देश दिया गया। प्रतियोगिता में विजेताओं को पारितोषिक का वितरण किया गया। सी.ओ स्काउट सुनील कुमार सोनी ने अतिथियों का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन नाना लाल अहारी ने किया। कार्यक्रम के दौरान एसीबीईओं विमल कुमार साद, स्थानीय संघ सचिव भैंरूलाल कटारा, भूपेन्द्र कुमार जैन, लीला राम गामोट, तुलसीराम खराड़ी, सुशीला डामोर, हंसबाला परमार, दीपशिखा गरासिया सहित स्काउट गाइड उपस्थित रहे।

- भारत स्काउट व गाइड, 53 वां उदय ओपन रोवर क्रू भुवाणा, साथ ही अंबिका मेडिकल एवं जनरल स्टोर ने मिलकर भुवाणा सीएचसी में एक व्यापक रक्तदान शिविर का आयोजन किया। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य समुदाय को संजीवनी दान करने के लिए रक्तदान की प्रेरणा देना और स्वास्थ्य सेवाओं में साझेदारी को बढ़ावा देना था। इस शिविर के दौरान कुल 45 यूनिट्स ब्लड इकट्ठा हुआ।

रक्तदाताओं को रक्तदान करने के लिए प्रेरित करने और उन्हें समर्थन प्रदान करने के लिए जिनेश सेन, दिव्यांश बृजवानी, वीरेंद्र सिंह, कमल सिंह, राहुल गमेती, कुलदीप गमेती, जलज व्यास, ललित गमेती, चेतन सुथार, पीयूष डांगी, राहुल प्रजापत, मुकेश कुमावत, जागृत लबाना, डॉ. भगवान सहाय, डॉ. योगेश कुमार, सुशील कुमार जैसे योगदानकर्ताओं ने अपनी सेवाएं दीं। मुख्य अतिथि सीएमएचओ शंकर लाल बामणिया और विशिष्ट अतिथि रघुनाथ सिंह राठौर, लक्ष्मण सिंह, प्रकाश प्रजापत, गणेश डांगी भी उपस्थित रहे और इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का समर्थन किया।

रक्तदान शिविर के अध्यक्ष रोवर लीडर सुरेश कुमार प्रजापत ने इस कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी को धन्यवाद दिया और उन्हें बधाई दी। यह एक अद्वितीय पहल है जो सामुदायिक एकता को बढ़ावा देती है और स्वास्थ्य और रोग निरोधक उपायों में जागरूकता फैलाने में मदद करती है।

बढ़ती जनसंख्या-घटते संसाधन

प्रस्तोता – अलका सक्सैना

क्या है जनसंख्या–

जनसंख्या से तात्पर्य है कि किसी विशेष भौगोलिक क्षेत्र में, समय विशेष में किसी विशेष प्रजाति के जीवों की संख्या को जनसंख्या कहते हैं। जैसे भारत में 2011 में 1,21,0193,422 व्यक्ति निवास करते थे, यह भारत देश की 2011 की जनसंख्या कहलाएगी।

देश एवं राज्य में जनसंख्या वृद्धि–

भारत देश में 1901 में जनसंख्या 23,8396,327 थी, यह 2001 में बढकर 1,02,87,37,736 हो गई तथा 2011 में 15वीं जनगणना के समय यह बढ़कर 1,21,0193,422 हो चुकी है। जब फिलीपींस में जन्मे ''7वां अरब शिशु'' को लेकर तथा भारत के लखनऊ (उ.प्र.) में जन्मे ''नरगिस'' शिशु को लेकर खुशी मनाई जा रही थी, वहीं ''बढती जनसंख्या तथा घटते संसाधन'' को लेकर विश्व में चिंता जताई जा रही थी।

इसी प्रकार राजस्थान की स्थिति को देखें तो वर्ष 2011 में राजस्थान में 35,620,086 पुरूष तथा 33,000,926 महिलाओं को मिलाकर जनसंख्या 68,621,012 हो चुकी थी। जहां राजस्थान क्षेत्रफल के अनुसार देश का सबसे बडा राज्य है (3,42,239 वर्ग कि. मी.) वहीं जनसंख्या की दृष्टि से इसका देश में 8वां स्थान है। 2001 में राजस्थान का जनसंख्या घनत्व 165 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर था। अब वह 2011 में बढकर 201 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी. हो चुका है। राजस्थान में 0–6 आयुवर्ग के शिशुओं का लिंगानुपात (sex ratio) 1981 से लगातार गिर रहा है। जहां 2001 में यह 909 था अब 2011 में यह घटकर 883 रह गया है। इस प्रकार लिंगानुपात में कमी आ रही है, जो प्राकृतिक असंतुलन की ओर इशारा कर रहा है।

जनसंख्या और विश्व–

जहां 1804 में विश्व की जनसंख्या 1 अरब थी वह 1959 में 3 अरब हो गई थी। इसी प्रकार 1974 में 4 अरब, 1987 में 5 अरब हो चुकी थी। 11 जुलाई, 1987 को क्रोएशिया की राजधानी ''जगरेव'' में ''मातेज गेस्वर'' नामक शिशु ने जन्म लिया जो 1987 में विश्व का 5 अरब वां शिशु था। 1999 में यह आबादी 6 अरब हो गई तथा 2011 में 7 अरब हो चुकी है।

इस प्रकार विश्व में सर्वाधिक जन संख्या वाले देशों में चीन का पहला नम्बर तथा भारत का दूसरा नम्बर है। इसके अलावा सं.रा. अमेरिका, इंडोनेशिया, रूस, ब्राजील, पाकिस्तान, बांग्लादेश, नाइजीरिया आदि देश भी अधिक जनसंख्या वाले देशों में शामिल हैं।

भारत में जनसंख्या वृद्धि के कारणः–

1. अशिक्षा
2. मनोरंजन के साधनों की कमी
3. बाल विवाह
4. सामाजिक मान्यताएं
5. बालक–बालिकाओं में जेण्डर असंवेदनशीलता
6. बालक शिशु की अधिक चाहत
7. अप्रवासन में वृद्धि
8. बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण जन्मदर में वृद्धि एवं मृत्युदर में कमी
9. देश को जलवायु का निषेचन में सहायक होना
10. जनसंख्या में प्रजनन योग्य व्यक्तियों की संख्या का अधिक होना एवं कृषि आधारित अर्थव्यवस्था।
11. सामाजिक चेतना का अभाव
12. सामाजिक सुरक्षा के नाम पर नर शिशुओं की अधिक चाहत।

इसके अलावा धार्मिक मान्यताएं, उपयुक्त साहित्य की कमी, जनसंख्या रोकने हेतु उचित वातावरण का न बनना आदि कारण भी जनसंख्या वृद्धि में सहायक हैं।

जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभाव –

1. जनसंख्या वृद्धि के कारण आवासीय क्षेत्रफल में वृद्धि तथा कृषि एवं वन आधारित क्षेत्रफल में कमी आने से ''ग्लोबल वार्मिंग'' की समस्या समूचे विश्व में उत्पन्न हो रही है। पृथ्वी के तापमान में निरन्तर वृद्धि हो रही है।
2. जहाँ मनुष्य की जनसंख्या बढ़ रही है, वहीं प्राकृतिक आवास में कमी होने से शेर, चीता, गोडावण, बाज–चील, हिरण एवं मगरमच्छ जैसे जीवन जन्तुओं की संख्या में तेजी से कमी आ रही है। इस कारण जैव विविधता के नष्ट होने से पारिस्थितिकी तंत्र में असंतुलन की स्थिति आ रही है।
3. बढ़ती जनसंख्या के कारण रोजगार के अवसर कम होने से युवाओं में निराशा बढ़ रही है।
4. अधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण शिशुओं में कुपोषण की स्थिति उत्पन्न हो रही है।
5. भविष्य में बढ़ती जनसंख्या के कारण पीने के पानी का संकट उत्पन्न हो सकता है।
6. प्राकृतिक संसाधनों के अन्धाधुन्ध दोहन के कारण परिस्थितिकी तंत्र (eco system) में असंतुलन उत्पन्न हो रहा है।
7. बढ़ती जनसंख्या के कारण, अधिक वाहन, अधिक औद्योगिकीकरण एवं ऊर्जा पर बढ़ती निर्भरता के कारण क्लोरो–फ्लोरो कार्बन के अत्यधिक उत्सर्जन की वज़ह से ओज़ोन परत टूट रही है, विश्व का ताप बढ़ रहा है। ध्रूवों की बर्फ पिघल रही है। समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा है, इस प्रकार भयंकर प्राकृतिक आपदाएं आ सकती हैं।
8. यातायात के साधन, बढ़ती जनसंख्या के कारण कम पड़ रहे हैं। विश्व में खाद्य संकट उत्पन्न हो रहा है।
9. बढ़ती जनसंख्या के कारण ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण एवं जल प्रदूषण उत्पन्न हो रहा है।
10. भौतिक संसाधनों पर अत्यधिक निर्भरता के कारण पर्यावरण असंतुलन की स्थिति बन रही है।

शेष पृष्ठ सं. 28 पर

हमारे महापुरुष

मंगल पांडे

स्वाधीनता के अग्रणी क्रांतिकारी

मंगल पांडे का नाम 'भारतीय स्वाधीनता संग्राम' में अग्रणी योद्धाओं के रूप में लिया जाता है, जिनके द्वारा जागृत की गई क्रांति की ज्वाला से अंग्रेज़ ईस्ट इंडिया कंपनी का शासन बुरी तरह हिल गया था। मंगल पांडे की शहादत ने भारत में पहली क्रांति के बीज बोए थे। ब्रह्मदेश (बर्मा 'वर्तमान म्यांमार') पर विजय तथा सिक्ख युद्ध की समाप्ति के पश्चात अंग्रेज़ों ने भारतवर्ष पर निष्कंटक राज करने के सपने देखें होंगे; पर उन्हें क्या पता था कि सन् 1857 का वर्ष उनकी आशाओं पर तुषारापात का वर्ष सिद्ध होगा।

जन्म और परिवार

क्रांतिकारी मंगल पांडे का **जन्म 19 जुलाई, 1827** को उत्तर प्रदेश के बलिया ज़िले के नगवा गाँव में हुआ था। कुछ सन्दर्भों में इनका जन्म स्थल फ़ैज़ाबाद ज़िले की अकबरपुर तहसील के सुरहुरपुर ग्राम में बताया गया है। इनके पिता का नाम दिवाकर पांडे तथा माता का नाम श्रीमती अभय रानी था।

जंग–ए–आज़ादी

'भारतीय इतिहास' में 29 मार्च, 1857 का दिन अंग्रेजों के लिए दुर्भाग्य के दिन के रूप में उदित हुआ। पाँचवी कंपनी की चौंतीसवीं रेजीमेंट का 1446 नं. का सिपाही वीरवर मंगल पांडे अंग्रेज़ों के लिए प्रलय–सूर्य के समान निकला। बैरकपुर की संचलन भूमि में प्रलयवीर मंगल पांडे का रणघोष गूँज उठा–

''बंधुओ! उठो! उठो! तुम अब भी किस चिंता में निमग्न हो? उठो, तुम्हें अपने पावन धर्म की सौगंध! चलो, स्वातंत्र्य लक्ष्मी की पावन अर्चना हेतु इन अत्याचारी शत्रुओं पर तत्काल प्रहार करो।''

मंगल पांडे के बदले हुए तेवर देखकर अंग्रेज़ सारजेंट मेजर ह्यूसन उसके पथ को अवरुद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। उसने उस विद्रोही को उसकी उद्दंडता का पुरस्कार देना चाहा। अपनी कड़कती आवाज़ में उसने मंगल पांडे को खड़ा रहने का आदेश दिया। वीर मंगल पांडे के अरमान मचल उठे। वह शिवशंकर की भाँति सन्नद्ध होकर रक्तगंगा का आह्वान करने लगा। उसकी सबल बाहुओं ने बंदूक तान ली। उसकी सधी हुई ऊँगलियों ने बंदूक का घोड़ा अपनी ओर खींचा और घुड़ड़ घूँ का तीव्र स्वर घहरा उठा। मेजर ह्यूसन घायल कबूतर की भाँति भूमि पर तड़प रहा था। उसका रक्त भारत की धूल चाट रहा था। 1857 के क्रांतिकारी ने एक फिरंगी की बलि ले ली थी। विप्लव महायज्ञ के पुरोधा मंगल पांडे की बंदूक पहला 'स्वाहा' बोल चुकी थी। स्वातंत्र्य यज्ञ की वेदी को दस्यु–देह की समिधा अर्पित हो चुकी थी।

ह्यूसन को धराशायी हुआ देख लेफ्टिनेंट बॉब वहाँ जा पहुँचा। उस अश्वारूढ़ गोरे ने मंगल पांडे को घेरना चाहा। पहला ग्रास खाकर मंगल पांडे की बंदूक की भूख भड़क उठी थी। उसने दूसरी बार मुँह खोला और लेफ्टिनेंट बॉब घोड़े सहित भू–लुंठित होता दिखाई दिया। गिरकर भी बॉब ने अपनी पिस्तौल मंगल पांडे की ओर सीधी करके गोली चला दी। विद्युत गति से वीर मंगल पांडे गोली का वार बचा गये और बॉब खिसियाकर रह गया। अपनी पिस्तौल को मुँह की खाती हुई देख बॉब ने अपनी तलवार खींच ली और वह मंगल पांडे पर टूट पड़ा। मंगल पांडे भी कच्चे खिलाड़ी नहीं थे। बॉब ने मंगल पांडे पर प्रहार करने के लिए तलवार तानी ही थी कि मंगल पांडे की तलवार का भरपूर हाथ उस पर ऐसा पड़ा कि बॉब का कंधा और तलवार वाला हाथ जड़ से कटकर अलग जा गिरा। एक बलि मंगल पांडे की बंदूक ले चुकी थी और दूसरी उसकी तलवार ने ले ली।

लेफ्टिनेंट बॉब को गिरा हुआ देख एक दूसरा अंग्रेज़ मंगल पांडे की ओर बढ़ा ही था कि मंगल पांडे के साथी भारतीय सैनिक ने अपनी बंदूक डंडे की भाँति उस अंग्रेज़ की खोपड़ी पर दे मारी। अंग्रेज़ की खोपड़ी खुल गई। अपने आदमियों को गिरते हुए देख कर्नल व्हीलर मंगल पांडे की ओर बढ़ा; पर सभी क्रुद्ध भारतीय सिंह गर्जना कर उठे–

'खबरदार, जो कोई आगे बढ़ा! आज हम तुम्हारे अपवित्र हाथों को ब्राह्मण की पवित्र देह का स्पर्श नहीं करने देंगे।'

कर्नल व्हीलर जैसे आया था वैसे ही लौट गया। इस सारे कांड की सूचना अपने जनरल को देकर, अंग्रेज़ी सेना को बटोरकर ले आना उसने अपना धर्म समझा। जंग–ए–आज़ादी के पहले सैनानी मंगल पांडे ने 1857 में ऐसी चिंगारी भड़काई, जिससे दिल्ली से लेकर लंदन तक की ब्रिटिश हुकूमत हिल गई।

विद्रोह का कारण (कारतूस घटना)

1857 के विद्रोह का प्रारम्भ एक बंदूक की वजह से हुआ था। सिपाहियों को 1853 में एनफ़ील्ड बंदूक दी गयी थीं, जो कि 0.577 कैलीबर की बंदूक थी तथा पुरानी और कई दशकों से उपयोग में लायी जा रही ब्राउन बैस के मुकाबले में शक्तिशाली और अचूक थी। नयी बंदूक में गोली दागने की आधुनिक प्रणाली का प्रयोग किया गया था, परन्तु बंदूक में गोली भरने की प्रक्रिया पुरानी थी। नयी एनफ़ील्ड बंदूक भरने के लिये कारतूस को दांतों से काट कर खोलना पड़ता था और उसमें भरे हुए बारूद को बंदूक की नली में भर कर कारतूस में

डालना पड़ता था। कारतूस के बाहरी आवरण में चर्बी होती थी, जो कि उसे नमी अर्थात पानी की सीलन से बचाती थी।

सिपाहियों के बीच अफ़वाह फ़ैल चुकी थी कि कारतूस में लगी हुई चर्बी सुअर और गाय के मांस से बनायी जाती है। यह हिन्दू और मुसलमान सिपाहियों दोनों की धार्मिक भावनाओं के विरुद्ध था। अंग्रेज अफ़सरों ने इसे अफवाह बताया और सुझाव दिया कि सिपाही नये कारतूस बनायें, जिसमें बकरे या मधुमक्खी की चर्बी प्रयोग की जाये। इस सुझाव ने सिपाहियों के बीच फ़ैली इस अफवाह को और मज़बूत कर दिया। दूसरा सुझाव यह दिया गया कि सिपाही कारतूस को दांतों से काटने की बजाय हाथों से खोलें। परंतु सिपाहियों ने इसे ये कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि वे कभी भी नयी कवायद को स्वीकार नहीं करेंगे। तत्कालीन अंग्रेज अफ़सर प्रमुख (भारत) जार्ज एनसन ने अपने अफ़सरों की सलाह को दरकिनार कर हुए इस कवायद और नयी बंदूक से उत्पन्न हुई समस्या को सुलझाने से मना कर दिया।

29 मार्च सन् 1857 को नए कारतूस को प्रयोग करवाया गया, मंगल पाण्डे ने आज्ञा मानने से मना कर दिया और धोखे से धर्म को भ्रष्ट करने की कोशिश के ख़िलाफ़ उन्हें भला–बुरा कहा, इस पर अंग्रेज अफ़सर ने सेना को हुकम दिया कि उसे गिरफ्तार किया जाये, सेना ने हुक्म नहीं माना। पलटन का सार्जेंट ह्यूसन स्वयं मंगल पांडे को पकड़ने आगे बढ़ा तो, पांडे ने उसे गोली मार दी, तब लेफ्टीनेंट आगे बढ़ा तो उसे भी पांडे ने गोली मार दी। घटनास्थल पर मौजूद अन्य अंग्रेज़ सिपाहियों ने मंगल पांडे को घायल कर पकड़ लिया। उन्होंने अपने अन्य साथियों से उनका साथ देने का आह्वान किया। किन्तु उन्होंने उनका साथ नहीं दिया। उन पर मुक़दमा (कोर्ट मार्शल) चलाकर 6 अप्रैल, 1857 को मौत की सज़ा सुना दी गई।

निधन

फ़ौजी अदालत ने न्याय का नाटक रचा और 8 अप्रैल को फाँसी देने का फैसला सुना दिया गया। बैरकपुर के जल्लादों ने मंगल पांडे के पवित्र ख़ून से अपने हाथ रँगने से इनकार कर दिया। तब कलकत्ता से चार जल्लाद बुलाए गए। 8 अप्रैल, 1857 के सूर्य ने उदित होकर मंगल पांडे के बलिदान का समाचार संसार में प्रसारित कर दिया। भारत के एक वीर पुत्र ने आज़ादी के यज्ञ में अपने प्राणों की आहुति दे दी। वीर मंगल पांडे के पवित्र प्राण–दृव्य को पाकर स्वातंत्र्य यज्ञ की लपटें भड़क उठीं। क्रांति की ये लपलपाती हुई लपटें फिरंगियों को लील जाने के लिए चारों ओर फैल गई।

पृष्ठ सं. 15 का शेष

जो लम्हे गुजारे साथ...

बंद हो गईं। हम सब अलग दुनियाँ में पहुंच गए। शिविर के चतुर्थ दिवस में हमें हाइक पर ले जाया गया। बाजार से निकलते हुए प्रशिक्षण केंद्र नंबर एक पर हम पहुंचे तथा प्राकृतिक संसाधनों की सहायता से खाना बना कर खाया। इसका आनंद हम जीवन पर्यंत नहीं भूल सकते। इसी दिवस दोपहर बाद हम सभी स्काउट गाड़ियों के माध्यम से माउंट आबू के सभी प्रमुख दर्शनीय स्थलों पर गए जैसे अर्बुदा माता मंदिर, शांति भवन, गुरु शिखर, सन सेट प्वाइंट, नक्की झील आदि इस दौरान मनोरंजन का दौर चलता रहा सभी ने सुमधुर गाने गाए तथा इस भ्रमण का आनंद लिया। शिविर के छठवें दिन हमें गौमुख ले जाया गया।

प्रकृति की गोद में हसीन वादियों और शीतल हवा के बीच ऊंची नीची लहराती सड़क पर हम गोमुख रवाना हुए। जाने कितनी सीढ़ियां नीचे उतरी ज्ञात नहीं लेकिन जो गीत–संगीत–नृत्य का संगम हुआ उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। इस अत्यंत पवित्र स्थल को देखकर हृदय हर्षित हो गया। गोमुख से अनवरत बहने वाला ठंडा पानी पीकर रोम–रोम शीतल हो गया। वापस आने का मन नहीं था लेकिन आना पड़ा। अब तक हम विभिन्न भाषाओं और क्षेत्रों के संभागी एक कुटुम्ब की तरह रहने लगे थे। रात्रि को प्रतिदिन शिविर ज्वाल का आनंद लिया। हँसी, ठिठोली, चुटकुले, गीत, नृत्य सब कुछ हुआ। नाटक करते समय मेरी टोली के साथी वसीम के बालों में आग लग जाना सबको याद होगा।

हमारी भरतपुरी भाषा में 'क्या कर रहा है भाई' को 'का करिया भैया' कहते हैं। यह वाक्य इतना प्रचलित हुआ कि प्रत्येक संभागी के लिए हर समय का यह तकिया कलाम हो गया। पूरा कैम्प यहाँ तक कि प्रशिक्षक भी यदा कदा यही बोलने लगे। शिविर ज्वाल में कोई अच्छा प्रदर्शन करता तो, या प्रदर्शन बिगड़ जाता तो भी विशेष लहजे से यही कहा जाता 'का करिया भैया' अर्थात क्या कर रहा है भाई।

बहुत कुशल प्रशिक्षक दल से हमने शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त किया। अत्यंत आत्मीय स्वभाव वाला यह प्रशिक्षक दल सबको याद रहेगा। उनका आभार। अंतिम दिवस में जिस स्थान को हम पसंद नहीं कर रहे थे वहां से निकलना बहुत कठिन लगा। जिन साथियों को हम जानते तक नहीं थे उन्हें छोड़ना हमारे लिए दिल को दुखाने वाला पल रहा। स्काउटिंग एक टाइम मशीन है जो तुम्हें वापस बचपन जीने का आनंद देता है। अंत में बस यही कहना चाहूंगा कि..

दोस्तों ! जो लम्हे गुजारे साथ... जीवन भर रहेंगे याद...

कभी मिलो तो मिलाना बाँया हाथ

कि तुम हृदय के पास थे...हैं...और रहेंगे

ऐ ! आबू की धरती !

तुम्हारी गोदी में, पुन: मिट्टी से मिलन हुआ...

ऐ ! हवा ! तुमसे मेरी साँसें महकीं...

ऐ ! भालू ! तुम रोज आते होंगे

किंतु हम ना होंगे...

तुम सब हृदय के पास थे... हैं... और रहेंगे...।

पर्यटन स्थल

कुंभलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य

कुम्भलगढ़, राजस्थान के राजसमन्द जिले में स्थित एक विख्यात पर्यटन स्थल है। कुम्भलगढ़ अभयारण्य क्षेत्र के समीप ही कुम्भलगढ़ किला स्थित है जो राजस्थान राज्य का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण किला है। इसका निर्माण पंद्रहवी सदी में राणा कुम्भा ने करवाया था। पर्यटक अभयारण्य एवं आस पास के रमणीय दृश्यों का आनंद ले सकते हैं। शत्रुओं से रक्षा के लिए इस किले के चारों ओर दीवार का निर्माण किया गया था।

कुम्भलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य, उदयपुर

कुम्भलगढ़ वन्यजीव अभयारण्य, उदयपुर–पाली–जोधपुर रोड़ पर उदयपुर से 65 किमी की दूरी पर स्थित है और कुम्भलगढ़ के किले को घेरता है। अभयारण्य, जो 578 वर्ग किमी के क्षेत्र में फैला हुआ है, इस किले से अपना नाम पाता है और राजसमंद, उदयपुर व पाली जिले के कुछ हिस्सों को शामिल करता है।

यह राजस्थान का एकमात्र अभयारण्य जहां भेड़िये को पाया जा सकता है। अन्य जंगली जानवरों में यहां हायना, सियार, तेंदुए, आलसी भालू, जंगली बिल्लियाँ, साँभर, नीलगाय, चौसिंघा (चार सींग वाले हिरण), चिंकारा और खरगोश शामिल हैं।

गर्मी के मौसम के दौरान आगंतुकों को अक्सर पानी के स्रोत के पास भेड़ियों का झुंड दिख सकता है। यह अभयारण्य पक्षियों में रुचि रखने वालों के लिए एक अच्छी जगह है, जहाँ वे अच्छी तरह से स्लेटी जंगली बाज़ सहित पक्षियों की भारी संख्या देख सकते हैं। कबूतर, मोर, लाल उल्लू, तोता, सुनहरा ओरिओल्स, बुलबुल, स्लेटी कबूतर और सफेद छाती वाले किंगफिशर जैसे अन्य पक्षियों की एक बड़ी संख्या को पानी के पास पाया जा सकता है। हॉर्स सफारी इस क्षेत्र को घूमने का एक सुखद तरीका है, जो सभी प्रकृति प्रेमियों के लिए एक अनूठा आकर्षण है।

कुम्भलगढ़ में पर्यटक स्थलों का भ्रमण

कुम्भलगढ़ अपने अभयारण्य एवं शानदार महलों के अतिरिक्त कई प्राचीन मंदिरों के लिए भी प्रसिद्ध हैं। उनमें से वेदी मंदिर, नीलकंठ महादेव मंदिर, मुच्छल महादेव मंदिर, परशुराम मंदिर, मम्मदेव मंदिर और रणकपुर जैन मंदिर इस पर्यटन स्थल के मुख्य पवित्र स्थल हैं।

कुम्भलगढ़ अभ्यारण्य चार सींगों वाले हिरन या चौसिंघा, काला तेंदुआ, जंगली सूअर, भेड़ियों, भालू, सियार, सांभर हिरन, चिंकारा, तेंदुओं, लकड़बघ्घों, जंगली बिल्ली, नीलगाय और खरगोश देखने के लिए आदर्श स्थल है। राज्य में केवल इस अभ्यारण्य में ही पर्यटक भेड़ियों को देख सकते हैं। हल्दीघाटी और घणेरो कुम्भलगढ़ के पर्यटन के लिए अन्य प्रसिद्ध आकर्षण हैं।

कुम्भलगढ़ किला

कुम्भलगढ़ किले का निर्माण पंद्रहवी सदी में राजा राणा कुम्भा ने करवाया था। यह मेवाड़ किला बनास नदी के तट पर स्थित है। पर्यटक बड़ी संख्या में इस किले को देखने आते हैं क्योंकि यह किला राजस्थान राज्य का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण किला है। यह विशाल किला 13 गढ़, बुर्ज और पर्यवेक्षण मीनार से घिरा हुआ है। कुम्भलगढ़ किला अरावली की पहाड़ियों में 36 किमी में फैला हुआ है। इस किले में सात बड़े दरवाजे हैं। इनमें से सबसे बड़ा राम पोल के नाम से जाना जाता है। किले की ओर जाने वाले मुख्य रास्ते हनुमान पोल पर पर्यटक एक मंदिर देख सकते हैं। हल्ला पोल, राम पोल, पाघरा पोल, निम्बू पोल, भैरव पोल एवं तोप–खाना पोल किले के अन्य दरवाजे हैं।

पर्यटक किले के ऊपर से आस पास के क्षेत्रों का अवलोकन कर सकते हैं। करतारगढ़ के नाम से जाना जाने वाला एक और किला कुम्भलगढ़ के मुख्य किले के अंदर स्थित है।

कुम्भलगढ़ तक पहुंचना

उदयपुर का महाराणा प्रताप हवाईअड्डा या डबोक हवाईअड्डा इस जगह से सबसे निकटतम हवाई अड्डा है। फालना जंक्शन रेलवे स्टेशन कुम्भलगढ़ के सबसे नज़दीक है। मुख्य भारतीय शहर जैसे मुंबई, अजमेर, दिल्ली, अहमदाबाद, जयपुर और जोधपुर लगातार अन्तराल पर चलने वाली रेल गाड़ियों द्वारा इस स्थान से जुड़े हुए हैं। निजी एवं सरकारी बसें, उदयपुर, अजमेर, जोधपुर और पुष्कर से कुम्भलगढ़ पहुँचने के लिए उपलब्ध हैं।

मौसम

कुम्भलगढ़ में साल भर मौसम सामान्य रहता है। हालाँकि कुम्भलगढ़ में अक्टूबर से लेकर मार्च के बीच का सुहाना मौसम पर्यटन के लिए आदर्श समय है। इस समय के दौरान आने वाले पर्यटक कुम्भलगढ़ में पर्यटन स्थलों के भ्रमण का एवं वन्य जीवन का आनंद उठा सकते हैं।

हमारा स्वास्थ्य

टायफायड

इस जटिल बिमारी के लक्षण एवं उपचार

– स्काउट गाइड ज्योति डेस्क

टायफायड यानी मियादी बुखार एक ऐसी बीमारी है जिससे रोगी एक लंबे और निश्चित समय तक पीड़ित रहता है। संसार में तीन करोड़ से भी ज्यादा लोग हर साल इसका शिकार होते हैं। यह रोग सालमोनेला टायफी नामक जीवाणु के संक्रमण से पैदा होता है। विकसित देशों में बेहतर जन–स्वास्थ्य की सुविधाओं व बेहतर स्वच्छता के कारण यह बीमारी बहुत कम होती जा रही है। टायफायड बुखार हर उम्र के लोगों को होता है। बच्चों में यह बुखार अधिक गंभीर, खरतनाक तथा समस्याएं उत्पन्न करने वाला साबित होता है।

टायफायड का बुखार करीब चार हफ्तों तक चलता है और इस बुखार का हर एक हफ्ता अपने खास लक्षण व जटिलता के लिए जाना जाता है। शुरूआत में इस बीमारी के रोगी की आंतों में ही संक्रमण होता है परन्तु रोग बढ़ने पर रोगी का प्रत्येक अंग इस जीवाणु के संक्रमण की गिरफ्त में आ जाता है। इसी वजह से टायफायड बुखार की जटिलताएं चिकित्सकों के लिए चुनौती बन जाती है।

टायफायड का जीवाणु रोगी से अन्य स्वस्थ बच्चों या बड़ों के संपर्क में आने पर मुंह के रास्ते आहार नलिका में प्रवेश करता है। वे लोग जो खान–पान के व्यवसाय से संबंध रखते हैं, टायफायड को फैलाने में अहम भुमिका अदा करते हैं।

सार्वजनिक स्थलों पर मलमूत्र त्यागने की गलत प्रथा से इस रोग को बढ़ावा मिलता है। गंदी जगह पर गलत ढंग से बनी खाने–पीने की चीजें खुले, कटे और सड़े गले फल, पीने का गंदा पानी, गंदी बर्फ व उससे जमी आइसक्रीम, गंदे दूध की वस्तुएं और गंदे तरीके से बनने वाले बेकरी के उत्पादों के कारण टायफायड रोग के जीवाणु स्वस्थ मनुष्य की आंतों में पहुंच जाते हैं और फिर लिंफ कोशिकाओं में लगातार अपनी संख्या को बढ़ाते हुए खून की नलिकाओं में संक्रमण उत्पन्न करते हैं। खून की सहायता से टायफायड के जीवाणु शरीर के प्रत्येक अंग को संक्रमित कर देते हैं। विशेषकर छोटी आंत की आंतरिक संरचना को प्रभावित करके उसमें छोटे–छोटे जख्म पैदा कर देते हैं। ये खतरनाक बैक्टीरिया रोगी के मलमूत्र के रास्ते बाहर आकर पूरे वातावरण में फैलते हैं और दूसरे स्वस्थ मनुष्यों को प्रभावित करते हैं।

रोगी की आंतों में संक्रमण के पश्चात शरीर के प्रत्येक अंग में संक्रमण हो सकता है और मस्तिष्क ज्वर, ब्रोंकाइटिस, न्यूमोनिया, हृदय की मांसपेशियों में संक्रमण, हड्डियों में संक्रमण, पित्त की थैली का संक्रमण, गुर्दे में संक्रमण के साथ इसमें से किसी भी रोग की समस्या पैदा हो सकती है। आंतों के जख्म या अल्सर के फटने से आपरेशन की स्थिति बन सकती हैं।

सही ढंग से रोगी को उपचार न मिलने की स्थिति में रोग काबू से बाहर होने लगता है और अगर यह रोग एक बार काबू से बाहर हो जाए तो यह कई प्रकार की समस्याओं को जन्म देता है। साधारण तौर पर ये समस्याएं रोगी के बुखार के 18–20 दिनों के बाद सामने आती हैं। आंतों से रक्तस्राव की स्थिति बच्चों के लिए इस हद तक खतरनाक होती है कि उनकी जान को खतरा पैदा हो जाता है। इससे फैले संक्रमण की वजह से शरीर के किसी भी अंग की कार्यक्षमता प्रभावित हो जाती है।

टायफायड या मियादी बुखार के लक्षण–

- **यह लगभग 15-20 दिन तक रहता है।**
- **यह बुखार रोजाना धीरे-धीरे चढ़ता है।**
- **टायफायड के रोगी को भूख लगनी बंद हो जाती है।**
- **रोगी के पेट में दर्द होने लगता है।**
- **रोगी की नब्ज़ सुस्त पड़ने लगती है।**
- **जिगर बढ़ जाता है।**
- **रोगी का वजन लगातार घटने लगता है।**
- **रोगी को सिरदर्द होता है।**
- **रोगी की आंतों से रक्तस्राव हो सकता है।**
- **रोगी के शरीर में तिल्ली बढ़ जाती है।**
- **रोगी को उल्टी आने को होती है।**
- **वयस्क रोगी को कब्ज व बच्चों को दस्त हो सकते हैं।**
- **रोगी सुस्त और कमजोर हो जाता है।**
- **रोगी के बदन पर गुलाबी रंग के दाने हो जाते हैं।**

टायफायड के लक्षण सामने आते ही किसी अच्छे चिकित्सा विशेषज्ञ से इलाज आरंभ कर देना चाहिए। रोगी को खून व मलमूत्र की जांच करानी चाहिए। साथ ही ब्लड कल्चर तथा विडाल टेस्ट भी कराना चाहिए। रोगी के आसपास व घर की सफाई का विशेष ख्याल रखना चाहिए। रोगी के कपड़ों, बिस्तर, नाखूनों आदि का भी ध्यान रखना चाहिए। टायफायड के बुखार में रोगी को कुछ विशेष प्रकार की दवाएं दी जाती है, जिन्हें चिकित्सक के संपर्क में रहकर उनकी सलाह से ही इस्तेमाल करना चाहिए जैसे, क्लोरेथफेनिकाल,एमाक्सीसिलीन, कोट्राइ–माक्साजोल, सेफट्राक्सोन, पेफ्लाक्सासीन, औफ्लाक्सासीन, एमाक्सीसिलीन, पेफला–क्सासीन, फ्यूरा–जालीडीन आदि। यदि रोग गंभीर हो जाए तो रोगी को अस्पताल में दाखिल कराकर ही उपचार करवाएं।

रोगी का समुचित इलाज करवाएं। खाने की जगह रसोईघर, ढाबा, होटल, रेस्तरां, मेला और समारोह में सामूहिक स्वच्छता का खास ध्यान दें। मक्खियों व मच्छरों पर नियंत्रण रखें और उन्हें पनपने न दें। व्यक्तिगत और सामूहिक सफाई की उचित व्यवस्था करें। खाना खाने से पहले सदैव अपने हाथों को धोकर साफ करने की आदत डाल लें। अपने नाखून हमेशा काटकर रखें। कपड़ों की सफाई रखें। पीने के लिए हमेशा स्वच्छ जल का ही इस्तेमाल करना चाहिए। पानी को उबालकर और फिर उसे छानकर ही पीना चाहिए। रहने के स्थान पर रोगी को मलमूत्र त्याग नहीं करने देना चाहिए।

टायफायड के रोगियों को दो तरह से टीका दिया जाता है। पहला मुँह से तथा दूसरा इंजेक्शन द्वारा दिया जाता है।

दोनों प्रकार के वैक्सीन के इस्तेमाल से पूर्व चिकित्सा विशेषज्ञ की सलाह ले लेनी चाहिए और उनके निर्देशों का पालन करना चाहिए। टायफायड का बुखार खतरनाक व जानलेवा बुखार है इसलिए इसका उपचार तुरन्त और प्रभावी ढंग से होना चाहिए।

शिक्षण में पर्यावरण मित्र परियोजनाओं का समावेश

प्रस्तोता – सरूपाराम माली

पर्यावरण मित्र परियोजना परिचय –

विद्यालय समाज का लघुरूप होता है। विद्यालय में आयोजित प्रत्येक गतिविधि का प्रभाव विद्यार्थियों के माध्यम से समाज पर पड़ता है। अतः विद्यार्थियों में पर्यावरणीय घटकों को समझने, उनके असंतुलन से पड़ने वाले दूरगामी प्रभावों की जानकारी एवं चेतना पैदा करने के उद्देश्य से भारत सरकार के वन एवं पर्यावरण मत्रांलय द्वारा स्थापित संस्था पर्यावरण शिक्षण केन्द्र (CEE) ने सम्पूर्ण गतिविधियों को पाँच भागों में विभाजित किया है–जल, ऊर्जा, जैवविविधता, कचरा प्रबन्धन और संस्कृति व धरोहर।

इन विषयों पर करके सीखने के सिद्धान्त पर आधारित गतिविधियाँ आयोजित करने के लिये पूरे देश में लगभग 2 लाख विद्यालयों में इको क्लबों की स्थापना की गई है। राजस्थान में इनका संचालन स्काउट गाइड संगठन के सहयोग से किया जा रहा है।

प्रायः यह देखा जाता है कि इको क्लब को सह शैक्षिक गतिविधि समझकर पर्यावरण चेतना रैली निकालने, दिवस मनाने, प्रतियोगिताएं, वार्ता एवं सेमिनार आयोजित करने और नारा लेखन के कार्यो तक ही सीमित किया जाता है। विद्यार्थी भी धीरे–धीरे इन गतिविधियों को अतिरिक्त बोझ मानने लगते है।

NCERT के 2005 की पाठ्यक्रम की रूपरेखा अनुसार विद्यार्थियों के ज्ञान को बाहरी जीवन से जोड़ने पर बल दिया गया है। इस संकल्पना को साकार करने के लिए विद्यालय की पर्यावरण मित्र परियोजनाएं असीमित अवसर उपलब्ध करवाती है। जैसे वर्षा के मौसम में विद्यालय परिसर एवं खेल मैदान में से बहने वाले पानी से कीचड़ एवं भूमि कटाव होना स्वाभाविक है। वाटर हार्वेस्टिंग प्रोजेक्ट बनाकर उस पानी के उचित प्रबन्धन से वृक्षारोपण का बेहतरीन कार्य किया जा सकता है। परिसर में सघन वृक्षारोपण से विभिन्न प्रजाति के पक्षी आकर्षित होंगे। यदि आने वाले परिन्दों के लिए जलपात्र, चुग्गा पात्र एवं अनुपयोगी सामग्री से घौंसले तैयार करके लगाते हैं तो विद्यालय में जैवविविधता का एक मॉडल विकसित होगा।

इसी प्रकार रद्दी कागज, पोषाहार में बंटने वाले फलों एवं सब्जियों के बेकार छिलके, बगीचे में उगने वाली घास–फूस एवं पत्तियों से कम्पोस्ट खाद तैयार करके पुनः बगीचे में डाली जा सकती है।

यदि विद्यालय प्रशासन पर्यावरण मित्र परियोजनाओं को मात्र सहशैक्षिक गतिविधि न मानकर शिक्षण विषयों के अभिन्न अंग के रूप में स्वीकार करें तो निश्चित रूप से एक साथ कई उद्देश्यों को आसानी से हासिल किया जा सकता है। इन परियोजनाओं को कक्षा एवं विद्यार्थियों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर निम्नानुसार प्रत्येक शैक्षिक विषय के साथ सह सम्बन्धित किया जा सकता है –

गणित –

विद्यालय परिसर में स्थित पेड़ पौधों की संख्या का प्रयोग करते हुए गणितीय संक्रियाएं करवाना, परिसर के पक्के एवं कच्चे स्थानों के क्षेत्रफल की गणना करना, पानी की टंकी का आयतन निकालना व उससे टंकी की भराव क्षमता ज्ञात करना, विद्यालय परिसर में उपलब्ध जल स्त्रोत का विभिन्न कार्यों में उपभोग होने वाले जल की दैनिक, मासिक एवं वार्षिक मात्रा की गणना करवाना और प्राप्त आंकड़ों को सारिणी, दण्ड आरेख, पाई–चार्ट व प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत करने का अभ्यास करवाना। अलग–अलग कालखण्डों में जल के उपभोग एवं बचत का तुलनात्मक विवरण तैयार करवाना और प्राप्त परिणामों का विश्लेषण करवाना।

इन बिन्दुओं को शिक्षण के विभिन्न अध्यायों के शिक्षण के दौरान आसानी से समाहित किया जा सकता है। ऐसा करने से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया अधिक रूचिकर होती है।

विज्ञान –

विद्यालय में उपलब्ध जल स्त्रोत यथा हेण्डपम्प, टंकी, नल, कुआं या बोरवेल के आस–पास व्यर्थ बहने वाले जल से होने वाले कीचड़ व गंदगी से प्रदूषण का लघुरूप स्पष्ट करने के साथ ही जल के उचित प्रबन्धन एवं व्यर्थ पानी को पेड़ पौधों में प्रवाहित करके पुनरूपयोग की संकल्पना को साकार किया जा सकता है। जल के नमुने एकत्रित करके विभिन्न प्रकार के गुणवत्ता परीक्षण भी करवाये जा सकते हैं।

स्थानीय परिवेश में पनपने वाले पेड़ पौधों को विद्यालय परिसर में लगाने से विद्यार्थियों को उनके औषधीय गुणों को जानने, प्रयोग करने के साथ ही अलग–अलग मौसम में पेड़ पौधों में होने वाले परिवर्तनों का अवलोकन करने, समझने एवं निष्कर्ष निकालने के अवसर उपलब्ध होंगे। व्यर्थ सामग्री से कम्पोस्ट एवं जैविक खाद बनाने की प्रक्रिया स्वयं करके सीखेंगे, वहीं गोबर, गौमुत्र, बेसन व गुड़ से बनने वाली संजीवन खाद, आंक की पत्तियों से दीमकरोधी घोल तैयार कर विद्यालय वाटिका में उपयोग करके भारी मात्रा में उपभोग होने वाले महंगे रासायनिक खादों के विकल्प का संदेश भी समाज तक पहुँचाया जा सकता है।

सघन वृक्षारोपण, दाने–पानी एवं घौंसलों की व्यवस्था से परिन्दों की हलचल बढ़ेगी, जिससे विद्यार्थी उनकी आदतों, स्वभाव, आकार, रंग रूप आदि का अवलोकन कर सकेंगे।

सामाजिक अध्ययन –

शिक्षा विभाग के आदेशानुसार विद्यालयों में बाल संसद का गठन किया जाना आवश्यक है। बाल संसद की समितियों द्वारा प्लानिंग

के तहत शिक्षकों के मार्गदर्शन में विभिन्न पर्यावरण मित्र परियोजनाएं संचालित करवाने से उनमें नेतृत्व क्षमता, समूह भावना, उत्तरदायित्त्व बोध, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा, आपसी सहयोग जैसे लोकतान्त्रिक एवं मानवीय मूल्यों का विकास होता है।

कृषि जगत की प्रत्यक्ष जानकारी देने के लिए कीचन गार्डन में मसाले और सब्जियों की पौध तैयार करके प्रति किलो उत्पादन में खर्च होने वाले पानी की गणना करवाने से वर्षा की मात्रा व कृषि उत्पादन स्तर के सम्बन्ध को समझ सकेंगे। पौध तैयार करने की कई विधियों के साथ ही सम्पूर्ण प्रक्रिया (फसल जीवन चक्र) का प्रत्यक्ष अनुभव कर सकेंगे।

भाषा शिक्षण –

व्याकरण सम्बन्धी कुछ अध्यायों को छोड़कर भाषा विषयों की अधिकांश विषय–वस्तु प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पर्यावरण से सम्बन्धित ही होती है। श्लोक, दोहो एवं कविताओं में पशु पक्षियों की उपमाओं का प्रयोग हो या हरी–भरी वसुन्धरा के सन्दर्भ, पक्षियों के मधुर कलरव हो या बन्दरों का उत्पात, बसन्त की हंसती–मुस्कराती पत्ती हो या ग्रीष्म की पतझड़; विद्यार्थी इन सभी भावों को परिसर में साक्षात् रूप में देखते है, तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में उनकी सहभागिता कई गुना बढ़ जाती है।

मनोविज्ञान के अनुसार बच्चों में fun, food व fight की नैसर्गिक प्रवृति होती है। यदि उनकी शक्तियों को सकारात्मक दिशा में प्रवाहित नहीं करेंगे तो खेलने, आपसी गुटबाजी, लड़ने–झगड़ने एवं तोड़–फोड़ की ओर प्रवृत्त हो सकते हैं, जिससे विद्यालय प्रशासन के सामने कभी–कभी अनुशासन हीनता की समस्या पैदा हो सकती है।

इस प्रकार पर्यावरण मित्र परियोजनाएं कक्षागत शिक्षण को रूचिकर एवं आसान बनाने के साथ ही विद्यार्थियों में सृजनात्मक, सामाजिक, मानसिक, शारीरिक एवं भावात्मक कौशलों के विकास में भी निर्णायक साबित हो सकती है।

स्काउटर व इको क्लब प्रभारी
रा.मा.विद्यालय सरतरा (सिरोही)

बढ़ती जनसंख्या-घटते संसाधन

पृष्ठ सं. 22 का शेष

महानगरों में जनसंख्या वृद्धि के दबाव से शुद्ध वायु एवं शुद्ध जल मिलना दूभर हो गया है, इस कारण रोगों की संख्या बढ़ रही है। ओज़ोन परत के टूटने से सूर्य से आने वाली अवरक्त एवं पराबैंगनी विकिरण मानव एवं पादपों पर हानिकारक प्रभाव उत्पन्न कर रही हैं।

कैसे रोकें जनसंख्या वृद्धिः–

1. जनसंख्या वृद्धि रोकने के लिए पाठ्यक्रम में जनसंख्या शिक्षा का अध्याय जोड़ा जा सकता है, इसमें जनसंख्या वृद्धि से नुकसान, छोटा परिवार सुखी परिवार, विभिन्न देशों की जनसंख्या एवं नागरिकों का जीवन स्तर, वैश्विक तापक्रम में वृद्धि, बढ़ती जनसंख्या घटते संसाधन, बढ़ती जनसंख्या घटते रोजगार के अवसर, बड़े परिवार में माता–पिता को असुविधा एवं बच्चों के 'बचपन' की घटती सुविधाएं जैसे बिन्दु शामिल किये जा सकते हैं।
2. जनसंख्या वृद्धि के कारण जन्मदर, मृत्युदर, अप्रावासन, उत्प्रावासन, जनसंख्या में चार घातांकी वृद्धि, जनसंख्या में लाजिस्टिक वृद्धि एवं पारिस्थितिकी तंत्र पर जनसंख्या वृद्धि के दुष्प्रभाव जैसे बिन्दु शामिल हो सकते हैं।
3. जीवन वृत्त विभिन्नता, अधिक एवं कम जनसंख्या वाले परिवारों में जीवन स्तर में अन्तर की कहानियां एक ही पुत्र अथवा एक ही पुत्री वाले परिवारों की सफलता की कहानियाँ जैसे बिन्दु पाठ्यक्रम में शामिल हो सकते हैं।
4. इसके अलावा 11 जुलाई विश्व जनसंख्या दिवस के अवसर पर सरकारी एवं गैर सरकारी की मदद से रैली, पोस्टर प्रतियोगिता, वाद– विवाद, निबन्ध तथा अन्य कार्यक्रम जिनमें जन सहभागिता हो तथा एक पुत्र तथा पुत्री वाले परिवारों को ऐसे अवसर पर प्रोत्साहन दिया जा सकता है। रेल, बस तथा अन्य सार्वजनिक स्थलों पर सुविधानुसार ''छोटा परिवार–विकसित देश का आधार'' जैसे स्लोगन लिखवाए जा सकते हैं।
5. विद्यालयों में विभिन्न अवसरों यथा 22 अप्रैल पृथ्वी दिवस, 14 नवम्बर बाल दिवस, 5 जून विश्व पर्यावरण दिवस, 12 जनवरी राष्ट्रीय युवा दिवस, 7 अप्रैल विश्व स्वास्थ्य दिवस, 1 जुलाई डॉक्टर दिवस, 16 अक्टुबर विश्व खाद्य दिवस, 8 मार्च अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस आदि अवसरों पर प्रतियोगिता आयोजित की जाएं तथा ''छोटा परिवार–सुखी परिवार'' विषय पर जन चेतना जागरण के लिए विभिन्न कार्यक्रम चौपालों पर आयोजित किये जा सकते हैं।
6. इस कार्यक्रम में युवा क्लब, विज्ञान क्लब, इको क्लब तथा विभिन्न एनजीओ स्वयंसेवी संगठनों की मदद ली जा सकती है। स्काउट एवं गाइड जैसे संगठनों के माध्यम से जन चेतना उत्पन्न की जा सकती है।

इस प्रकार हम सब मिलकर ''छोटा परिवार–सुखी परिवार'', ''एक दम्पत्ति–एक बच्चा'', ''छोटा परिवार– प्रदूषण से बचाव'' की अवधारणा से समाज को अवगत कराने तथा कम जनसंख्या से बेहतर लालन पोषण एवं बेहतर जीवन स्तर एवं पारिस्थितिकी तंत्र संतुलन तथा जैव विविधता की स्थिति उचित बनाए रखने के प्रयास करेंगे तो हमारा देश शीघ्र ही विकसित देशों की श्रेणी में आएगा तथा प्राकृतिक संसाधन भी लम्बे समय तक उपलब्ध रहेंगे।

छोटा सा परिवार हमारा।
आगे बढ़ता देश हमारा।।

दक्षता पदक

स्काउट गाइड ज्योति में दक्षता पदकों की विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की जा रही हैं। आशा है यह जानकारी प्रशिक्षण के मद्देनज़र उपयोगी साबित होगी। इस अंक में 'कलाकार' एवं 'शिविर संरक्षक' दक्षता बैज की जानकारी दी जा रही है।

कलाकार
ARTIST

प्रत्येक बालक–बालिका में कोई न कोई कला विद्यमान होती है। आवश्यकता होती है इनमें छिपी कला को उजागर करने की। स्काउट गाइड संगठन दक्षता बैज के माध्यम से स्काउट–गाइड को उनमें विद्यमान कला से उन्हें अवगत कराने का कार्य करता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कलाकार दक्षता बैज का पाठ्यक्रम निर्धारित किया गया है। इस दक्षता बैज के लिए स्काउट गाइड को निम्न कलाओं का प्रदर्शन करना होता है –

(1) सुचित्रिता कला (ग्राफिक आर्ट) – रेखा चित्र बनाना, रंग भरना, धातु की प्लेट पर चित्रकारी, लकड़ी पर खुदाई और लिनोकट्स।

(2) सजावटी कार्य – वॉल पेपर डिजाइन या कपड़े पर बुनाई, पोस्टर, पुस्तक आवरण, चपटा किया गया लोहा आदि।

(3) प्लास्टिक कला – चिकनी मिट्टी की मूर्तियां बनाना, प्लास्टिसीन का सामान, मिट्टी के बर्तन बनाना तथा डिजाइन बनाना।

(4) नक्काशी करना – लकड़ी पर, पत्थर पर या अर्द्ध–स्थायी पदार्थों पर जैसे–साबुन आदि पर नक्काशी करना।

(5) अक्षर कला – रोम लिपि आदि।

किसी भी दशा मे हूँबहूँ नकल या प्रतिलिपि मान्य नहीं होती है। उसे अपनी मर्यादा को ध्यान में रखते हुए, सम्पूर्ण कार्य अपने हाथ से ही करना होता है।

टिप्पणी :

(1) कला का उद्देश्य किसी राष्ट्रीय समस्या जैसे– संरक्षण, जनसंख्या, शिक्षा आदि से सम्बन्धित होना चाहिए।

(2) अपनी एक सर्वश्रेष्ठ कृति तैयार कर उसे अपने क्लब रूम में रखे या उसे किसी दिव्यांग बच्चे को उपहार स्वरूप दें।

(3) परीक्षक की उपस्थिति में उनके द्वारा चुने गए संख्या 1 से सम्बन्धित कुछ वस्तुओं अथवा वस्तु समूह या डिजाइन का रेखाचित्र बनाए।

शिविर संरक्षक
CAMP WARDEN

शिविर संरक्षक दक्षता बैज प्राप्त करने के लिए स्काउट गाइड को निम्न कार्य करने होते हैं –

(1) चार अवसरों पर कम–से–कम दस रात्रि शिविर में रहा हो।

(2) स्काउट्स के ग्रीष्मकालीन शिविर में पूर्णकालिक क्वार्टर मास्टर के रूप में सहयोग प्रदान किया हो।

(3) अपने कर्तव्य पालन के क्रम में तीन दिन के लिए स्थायी शिविर संरक्षक के रूप में सहयोग किया गया हो।

(4) तम्बू–कला के विषय में जानकारी हो तथा शिविर सम्बन्धी और प्रशिक्षण सम्बन्धी सामग्री को सुरक्षित रखने के तरीके जाने।

(5) एक शिविर पुस्तकालय को व्यवस्थित रख सके।

(6) 'शिविर स्वच्छता' के बारे में पर्याप्त जानकारी रखे।

(7) प्राथमिक सहायता की पर्याप्त जानकारी हो तथा आपातकाल के अवसर पर सहायता प्राप्त करने के तरीकों की जानकारी हो।

(8) शिविर में शिविरार्थियों के लिए भोजन सामग्री का अनुमान लगाने, खरीदने, बाँटने तथा देखभाल करने की क्षमता हो।

गतिविधि पञ्चांग

राज्य पञ्चांग

PROPOSED

विश्व जनसंख्या दिवस–(जन चेतना रैली)	ग्रुप/स्थानीय संघ स्तर	11.07.2024
प्रधानमंत्री शील्ड लॉग बुक भेजना	राज्य मुख्यालय पर	15.07.2024 तक
नेशनल ग्रीन कोर गतिविधियां	ग्रुप/जिला स्तर	16 से 22.07.24 तक
संस्था प्रधान सेमिनार	स्था. संघ स्तर पर	20.07.2024 तक
स्थानीय संघ वार्षिक अधिवेशन	स्थानीय संघ स्तर पर	20.07.2024 तक
ट्रेनिंग कॉउन्सलर/ए.डी.सी द्वारा ग्रुप संभाल	स्थानीय संघ स्तर पर	20 से 26.07.2024 तक
स्टेट एडवेंचर प्रोग्राम	आबू पर्वत न.1	21 से 25.07.2024 तक
एडवेंचर प्रोग्राम	मण्डल स्तर पर	25 से 29.07.2024 तक
स्काउटर/गाइडर एवं ट्रेनिंग कॉउन्सलर अभिनवन शिविर	जिला स्तर	31 जुलाई 2024 तक
सचिव/संयुक्त सचिव संगोष्ठी	जिला स्तर	31 जुलाई 2024 तक
संस्था प्रधान सेमिनार	जिला स्तर	31 जुलाई 2024 तक
विद्यालय स्वच्छता अभियान	ग्रुप स्तर पर	31 जुलाई 2024 तक
ग्रुप स्तरीय हाईक (पैदल) स्काउट/गाइड/रोवर/रेंजर	ग्रुप स्तर पर	31 जुलाई 2024 तक
राज्य पुरस्कार प्रशिक्षण शिविर स्काउट/गाइड/रोवर/रेंजर	जिला स्तर पर	31 जुलाई 2024 तक
सचिव/संयुक्त सचिव संगोष्ठी	मण्डल स्तर पर	31 जुलाई 2024 तक
प्रभारी सहायक जिला कमिश्नर सेमिनार	मण्डल स्तर पर	31 जुलाई 2024 तक
मण्डल स्तरीय ऑर्गेनाइजर्स संगोष्ठी	मण्डल स्तर पर	31 जुलाई 2024 तक

अन्तर्राष्ट्रीय पञ्चांग

PROPOSED

12th National Scout Jamboree at Taiwan	10 - 16 July 2024	Taiwan
Jamscout 2024- National Scout Jamboree in Spain	13 - 21 July 2024	Cobaleda, Soria
7th National Jamboree - Mongolia	19 - 27 July 2024	Mangolia
09th Africa Scout Jamboree	02 - 11 August 2024	Bungere, Gitega
Red Rose International Jamboree	03 - 10 August, 2024	United Kingdom
13th Nippon Agoonoree – National Camp for the Scouts with Special Needs	08 - 12 August, 2024	Fukushima, Japan
43rd World Scout Conference	17-23 August, 2024	Egypt
26th Australian Jamboree (AJ2025)	06 - 15 January 2025	Maryborough in Queensland
16th World Scout Moot 2025	25 July - 03 August, 2025	Lisboa, Portugal

National Headquarters website : www.bsgindia.org

चित्रमय झलकियां

धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश) में आयोजित रोवर/रेंजर साहसिक शिविर में स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों को स्काउट कैप व टी–शर्ट प्रदान कर स्वागत करते हुए प्रदेश के स्टेट कमिश्नर श्री महेन्द्र कुमार पारख

कौशल विकास प्रशिक्षण केंद्र

मण्डल मुख्यालय, बनीपार्क, जयपुर द्वारा संचालित कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र के समापन पर विधायक श्री गोपाल शर्मा को स्कार्फ पहनाते राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन, साथ में हैं राज्य आयुक्त डॉ. अखिल शुक्ला एवं मंचासीन अतिथिगण के साथ प्रशिक्षण दल

साहसिक शिविर संभागियों एवं संचालक दल के साथ धर्मशाला के प्रशासनिक अधिकारी एवं स्थानीय स्काउट गाइड पदाधिकारी

राज.बा.उ.मा.विद्यालय माधोगढ़ (तुंगा) द्वारा संचालित कौशल विकास प्रशिक्षण केन्द्र का अवलोकन करते हुए राज्य सचिव डॉ. पी.सी. जैन

गुरूग्राम में आयोजित एपीआर गवर्नेन्स वर्कशॉप 2024 के समापन के अवसर पर चीफ नेशनल कमिश्नर डॉ. के.के. खण्डेलवाल एवं इन्टरनेशनल कमिश्नर (स्काउट) श्री निरंजन आर्य के साथ देश–विदेश से आए संभागीगण (ऊपर) एवं संयुक्त निदेशक श्री अमर बी. श्रेत्री पौधा भेंट कर श्री निरंजन आर्य का स्वागत करते हुए (नीचे)

प्रकाशक व मुद्रक : डॉ. पी.सी. जैन, राज्य सचिव, राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स व गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, जयपुर
फोन नं. 0141–2706830 द्वारा मैसर्स हरिहर प्रिण्टर्स, जे–97, अशोक चौक, आदर्श नगर, जयपुर–302004 फोन : 0141–2600850 से मुद्रित।

हिन्दी मासिक एक प्रति रूपये पन्द्रह
प्रकाशन – प्रत्येक माह
पंजीकृत समाचार पत्रों की श्रेणी के अन्तर्गत
आर.एन.आई. नम्बर : RAJ BIL/2000/01835
प्रेषक :–
राजस्थान राज्य भारत स्काउट्स एवं गाइड्स, जवाहर लाल नेहरू मार्ग, बजाज नगर, जयपुर–302015
फोन : 0141–2706830, 2941098
ई–मेल : scoutguidejyoti@gmail.com